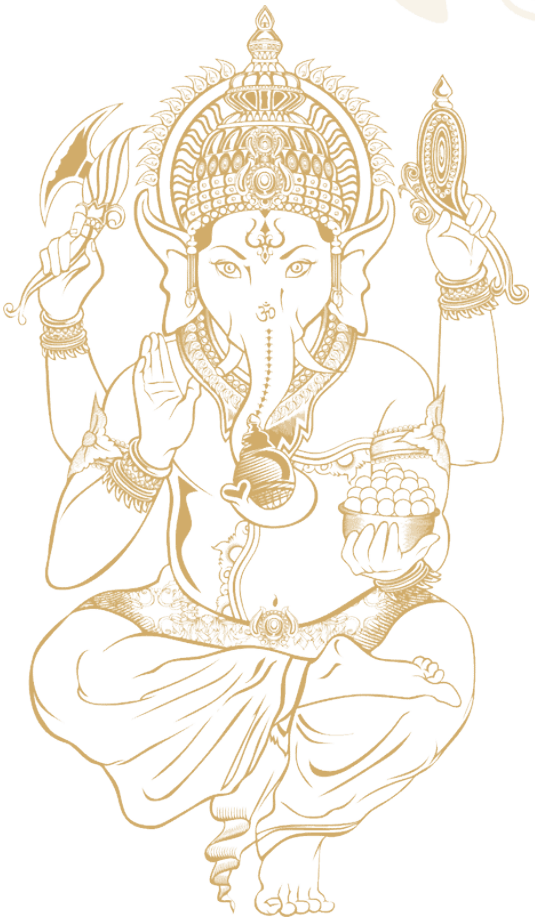

Mr.gajanan nagrikar

07 Aug 2025

12:35 AM

Yavatmal

Model: Web-KundliPhal **Order No: 119214301**

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**6-07/08/2025**
दिवस	बुध–गुरुवार
जन्म समय	**00:35:00 कला**
इष्ट	46:42:10 घटी
स्थान	**Yavatmal**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	20:24:00 उत्तर
रेखांश	78:08:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:17:28 कला
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 कला
स्थानिक वेल	00:17:32 कला
वेलान्तर	-00:05:55 कला
साम्पातिक वेल	21:19:48 कला
सूर्योदय	05:54:07 कला
सूर्यास्त	18:52:06 कला
दिनमान	12:57:59 कला
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	वर्षा
सूर्याचे अंश	20:21:15 कर्क
लग्नाचे अंश	05:45:37 वृषभ

अवकहड़ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	वृषभ – शुक्र
राशि–स्वामी	**धनु – गुरु**
नक्षत्र–चरण	**पूर्वाषाढ़ा – 2**
नक्षत्र स्वामी	शुक्र
योग	विष्कुम्भ
करण	कौलव
गण	मनुष्य
योनि	वानर
नाड़ी	मध्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
वर्ग	सर्प
युँजा	अन्त्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	धा–धर्मेन्द्र
पाया(राशि–नक्षत्र)	लौह – ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	सिंह

पंचांग

आजोबांचें नांव _____:
बडीलांचे नांव _____:
आईचें नांव _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	माह	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1947	श्रावण	16
पंजाबी	संवत : 2082	श्रावण	23
बंगाली	सन् : 1432	श्रावण	22
तमिल	संवत : 2082	अदी	23
केरल	कोल्लम : 1200	काभकतका	22
नेपाली	संवत : 2082	श्रावण	23
चैत्रादी	संवत : 2082	श्रावण	शुक्ल 13
कार्तिकादी	संवत : 2082	श्रावण	शुक्ल 13

पंचांग

सूर्योदय समयी तिथि _____: 12
तिथि समाप्ति वेल _____: 14:08:35
जन्म तिथि _____: 13
सूर्योदय समयी नक्षत्र _____: मूल
नक्षत्र समाप्ति वेल _____: 12:59:46 कला
जन्म योग _____: पूर्वाषाढ़ा
सूर्योदय समयी योग _____: वैधृति
योग समाप्ति वेल _____: 07:17:18 कला
जन्म योग _____: विष्कुम्भ
सूर्योदय समयी करण _____: बालव
करण समाप्ति वेल _____: 14:08:35 कला
जन्म करण _____: कौलव
भयात _____: 28:58:07
भभोग _____: 62:33:30
भोग्य दशा वेल _____: शुक्र 10 वर्ष 9 मा 17 दि

घात चक्र

मास _____: श्रावण
तिथि _____: 3-8-13
दिवस _____: शुक्रवार
नक्षत्र _____: भरणी
योग _____: वज्र
करण _____: तैतिल
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: गरूड़
लग्न _____: धनु
रवि _____: तुला
चन्द्र _____: मीन
मंगळ _____: वृश्चिक
बुध _____: सिंह
गुरु _____: धनु
शुक्र _____: कुम्भ
शनि _____: कन्या
राहु _____: कुम्भ

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

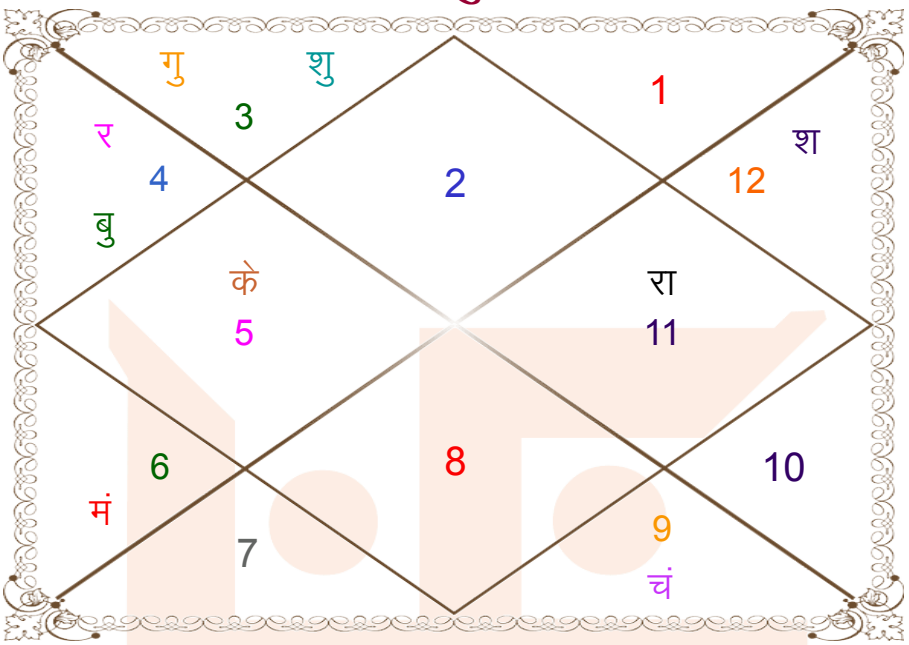

चन्द्र कुंडली

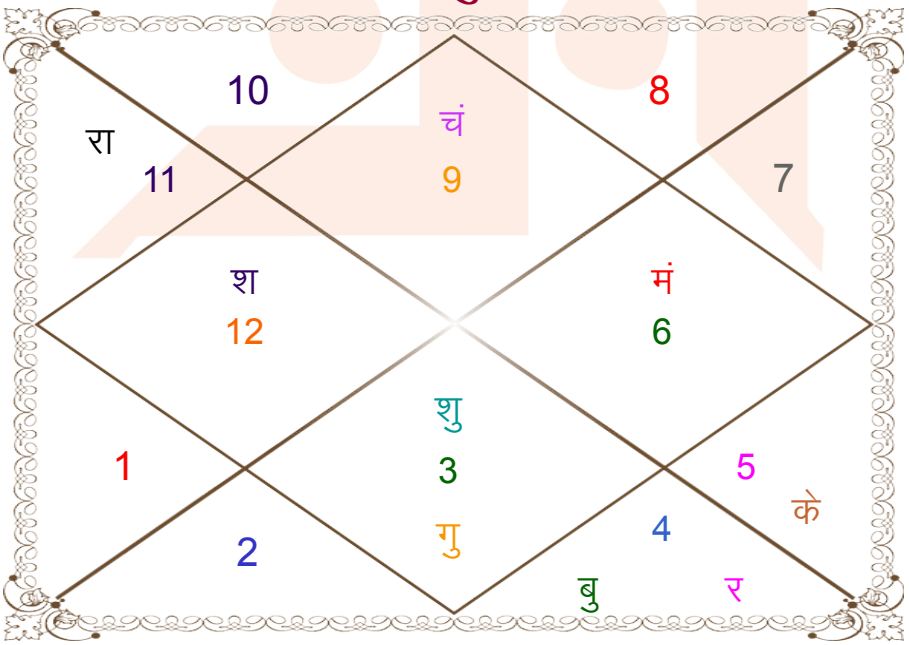

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

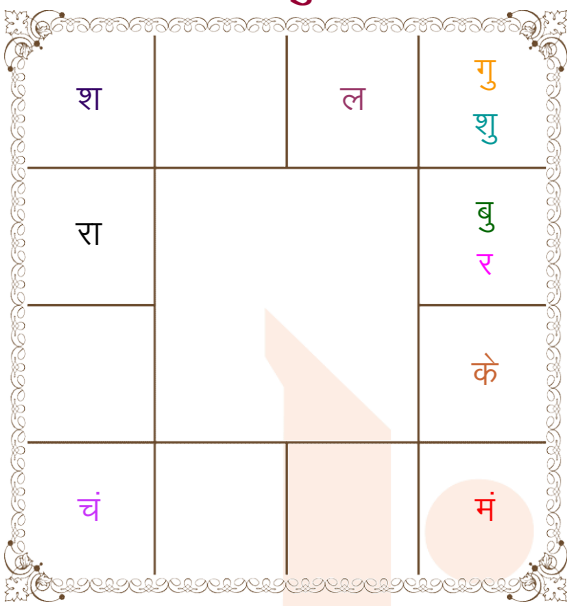

लग्न कुंडली

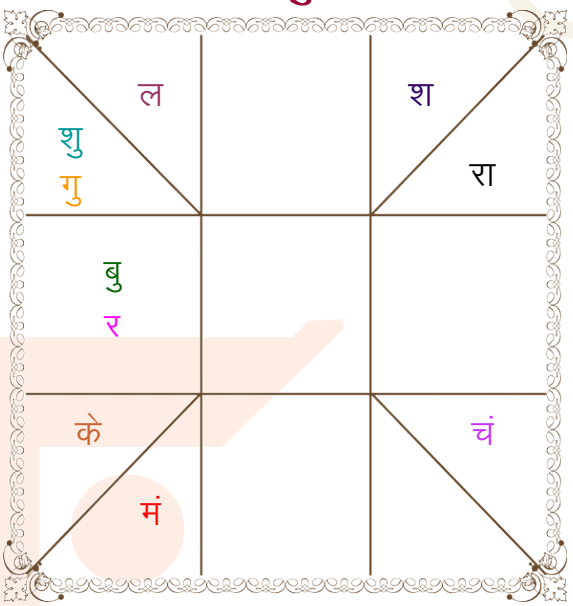

विंशोत्तरी

शुक्र 10वर्ष 9मा 17दि

शुक्र	
07/08/2025	
25/05/2136	
शुक्र	24/05/2036
रवि	25/05/2042
चन्द्र	24/05/2052
मंगळ	25/05/2059
राहु	25/05/2077
गुरु	25/05/2093
शनि	25/05/2112
बुध	26/05/2129
केतु	25/05/2136

योगिनी

सिद्धा 3वर्ष 9मा 10दि

सिद्धा	
07/08/2025	
18/05/2029	
	00/00/0000
	00/00/0000
	07/08/2025
पिंगला	17/11/2025
धान्या	18/06/2026
भ्रामरी	29/03/2027
भद्रिका	18/03/2028
उल्का	18/05/2029

ग्रह स्पष्ट तथा त्यांची स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृष	05:45:37	379:19:53	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	बुध	----
सूर्य			कर्क	20:21:15	00:57:28	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	शुक्र	मित्र राशि
चंद्र			धनु	19:28:05	12:46:34	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	राहु	सम राशि
मंगळ			कन्या	05:40:22	00:37:20	उ.फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	बुध	शत्रु राशि
बुध	व	अ	कर्क	11:06:51	00:27:20	पुष्य	3	8	चंद्र	शनि	चंद्र	शत्रु राशि
गुरु			मिथु	18:43:25	00:12:33	आर्द्रा	4	6	बुध	राहु	चंद्र	शत्रु राशि
शुक्र			मिथु	13:29:06	01:10:00	आर्द्रा	3	6	बुध	राहु	बुध	मित्र राशि
शनि	व		मीन	07:13:04	00:02:23	उ.भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	बुध	सम राशि
राहु	व		कुंभ	24:32:55	00:05:36	पू.भाद्रपद	2	25	शनि	गुरु	बुध	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	24:32:55	00:05:36	पू.फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	बुध	शत्रु राशि
हर्ष			वृष	06:51:45	00:01:30	कृतिका	4	3	शुक्र	सूर्य	बुध	----
नेप	व		मीन	07:40:44	00:00:59	उ.भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	केतु	----
प्लूटो	व		मक	08:04:54	00:01:22	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	----
दशम भाव			मक	23:17:31	--	श्रवण	--	22	शनि	चंद्र	सूर्य	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
लाहिरी अयनांश : 24:12:57

लग्न–चलित

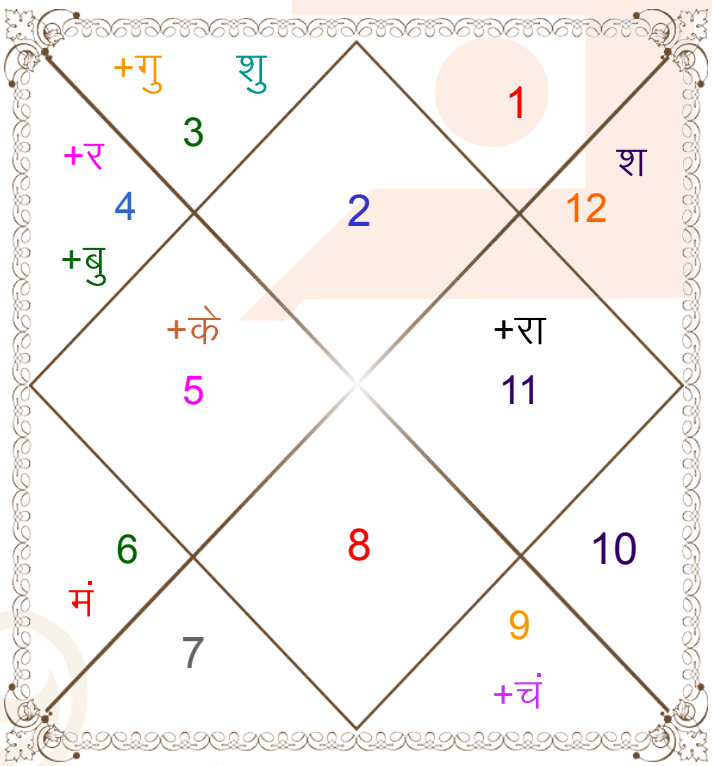

चन्द्र कुंडली

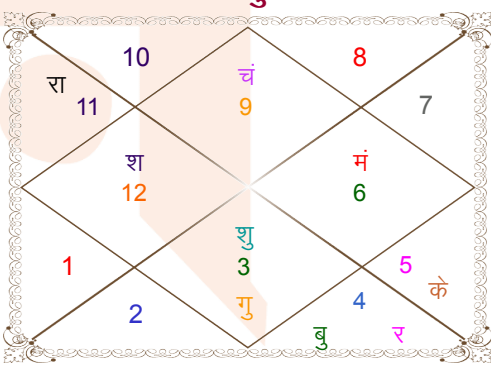

नवमांश कुंडली

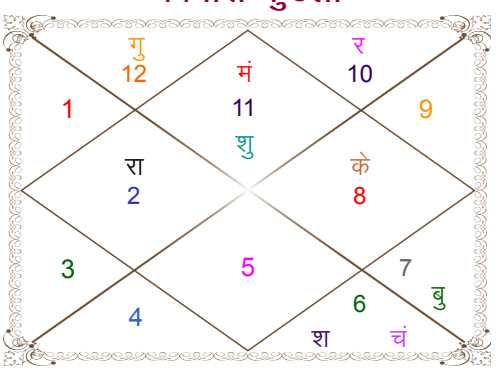

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मेष	18:40:56	वृषभ	05:45:37
2	वृषभ	18:40:56	मिथुन	01:36:15
3	मिथुन	14:31:34	मिथुन	27:26:53
4	कर्क	10:22:12	कर्क	23:17:31
5	सिंह	10:22:12	सिंह	27:26:53
6	कन्या	14:31:34	तुला	01:36:15
7	तुला	18:40:56	वृश्चिक	05:45:37
8	वृश्चिक	18:40:56	धनु	01:36:15
9	धनु	14:31:34	धनु	27:26:53
10	मकर	10:22:12	मकर	23:17:31
11	कुम्भ	10:22:12	कुम्भ	27:26:53
12	मीन	14:31:34	मेष	01:36:15

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृषभ	05:45:37
2	मिथुन	02:13:39
3	मिथुन	26:52:36
4	कर्क	23:17:31
5	सिंह	24:14:24
6	कन्या	29:51:38
7	वृश्चिक	05:45:37
8	धनु	02:13:39
9	धनु	26:52:36
10	मकर	23:17:31
11	कुम्भ	24:14:24
12	मीन	29:51:38

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल

चलित कुंडली

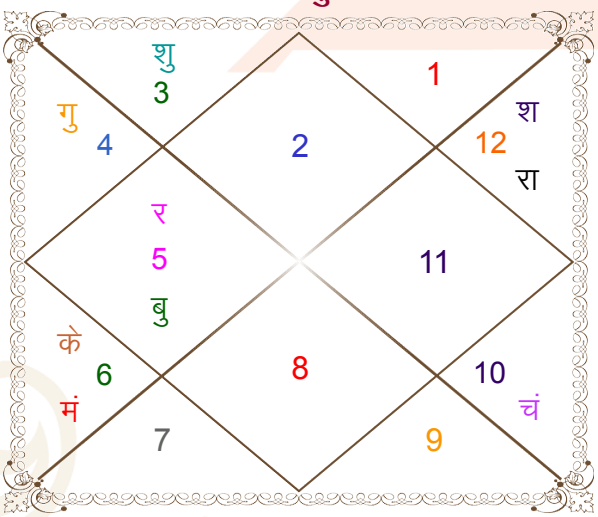

भाव कुंडली

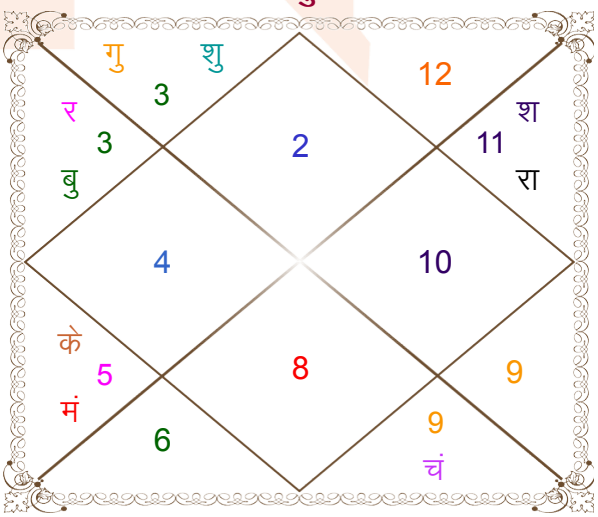

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	——— कारक ———		——— अवस्था ———				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	आत्मा	पितृ	कुमार	मुदित	कौतुक	4.42	21 %
चंद्र	अमात्य	मातृ	वृद्ध	निपीदित	आगम	1.16	59 %
मंगळ	कलत्र	भ्रातृ	मृत	खल	आगम	1.05	47 %
बुध	पुत्र	ज्ञाति	वृद्ध	विकल	प्रकाश	0.00	78 %
गुरु	भ्रातृ	धन	वृद्ध	खल	आगम	6.37	62 %
शुक्र	मातृ	कलत्र	युवा	मुदित	आगम	6.13	36 %
शनि	ज्ञाति	आयुष्य	वृद्ध	निपीदित	उपवेशन	1.43	34 %
राहु	———	ज्ञान	मृत	मुदित	निद्रा	0.00	16 %
केतु	———	मोक्ष	मृत	खल	आगम	0.00	16 %
एकुण						**20.56**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल

चलित कुंडली

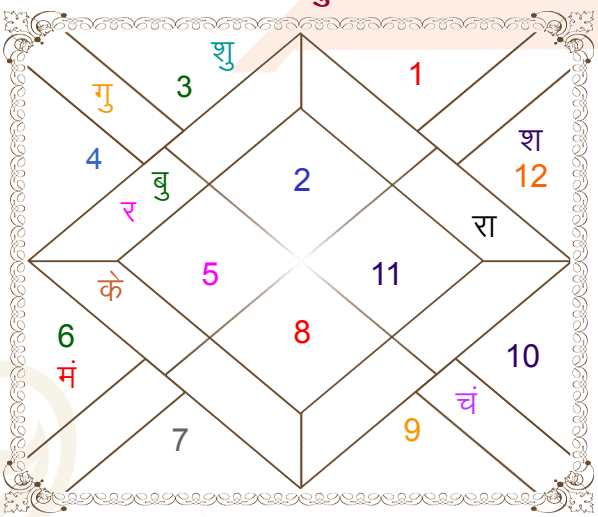

लग्न–चलित

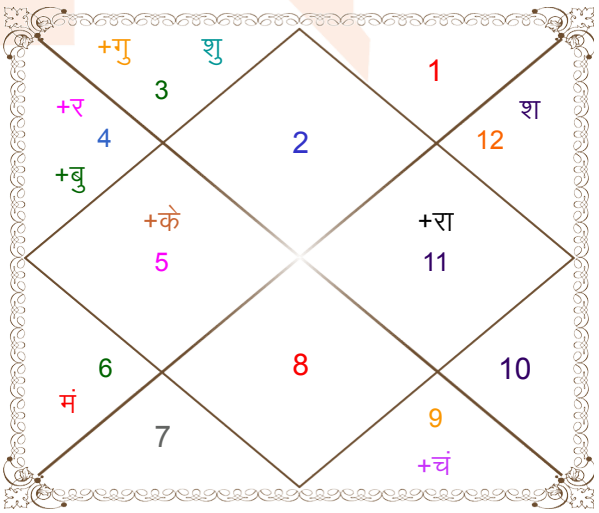

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा वेल : शुक्र 10 वर्ष 9 महिना 17 दिवस

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगळ 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
07/08/2025		24/05/2036		25/05/2042		24/05/2052		25/05/2059	
24/05/2036		25/05/2042		24/05/2052		25/05/2059		25/05/2077	
	00/00/0000	सूर्य	11/09/2036	चंद्र	25/03/2043	मंगळ	21/10/2052	राहु	04/02/2062
	00/00/0000	चंद्र	13/03/2037	मंगळ	24/10/2043	राहु	08/11/2053	गुरु	30/06/2064
	00/00/0000	मंगळ	18/07/2037	राहु	24/04/2045	गुरु	15/10/2054	शनि	07/05/2067
	07/08/2025	राहु	12/06/2038	गुरु	24/08/2046	शनि	24/11/2055	बुध	23/11/2069
राहु	25/07/2026	गुरु	31/03/2039	शनि	25/03/2048	बुध	20/11/2056	केतु	12/12/2070
गुरु	25/03/2029	शनि	12/03/2040	बुध	24/08/2049	केतु	18/04/2057	शुक्र	12/12/2073
शनि	24/05/2032	बुध	17/01/2041	केतु	25/03/2050	शुक्र	18/06/2058	सूर्य	05/11/2074
बुध	25/03/2035	केतु	25/05/2041	शुक्र	24/11/2051	सूर्य	24/10/2058	चंद्र	06/05/2076
केतु	24/05/2036	शुक्र	25/05/2042	सूर्य	24/05/2052	चंद्र	25/05/2059	मंगळ	25/05/2077

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
25/05/2077		25/05/2093		25/05/2112		26/05/2129		25/05/2136	
25/05/2093		25/05/2112		26/05/2129		25/05/2136		00/00/0000	
गुरु	13/07/2079	शनि	27/05/2096	बुध	22/10/2114	केतु	22/10/2129	शुक्र	25/09/2139
शनि	23/01/2082	बुध	05/02/2099	केतु	19/10/2115	शुक्र	22/12/2130	सूर्य	24/09/2140
बुध	30/04/2084	केतु	16/03/2100	शुक्र	19/08/2118	सूर्य	29/04/2131	चंद्र	26/05/2142
केतु	06/04/2085	शुक्र	17/05/2103	सूर्य	26/06/2119	चंद्र	28/11/2131	मंगळ	26/07/2143
शुक्र	06/12/2087	सूर्य	28/04/2104	चंद्र	24/11/2120	मंगळ	25/04/2132	राहु	08/08/2145
सूर्य	23/09/2088	चंद्र	27/11/2105	मंगळ	21/11/2121	राहु	13/05/2133		00/00/0000
चंद्र	23/01/2090	मंगळ	06/01/2107	राहु	10/06/2124	गुरु	19/04/2134		00/00/0000
मंगळ	30/12/2090	राहु	12/11/2109	गुरु	16/09/2126	शनि	29/05/2135		00/00/0000
राहु	25/05/2093	गुरु	25/05/2112	शनि	26/05/2129	बुध	25/05/2136		00/00/0000

- वरील दशा चन्द्रमा चे अंशा चे आधार वर्ती दीलेली आहे. भयात भभोग चे आधार अनुसार दशाच्या भोग्यकाल शुक्र 10 वर्ष 8 मा 26 दि होता आहेत.
- वरील दिनांक दशा समाप्ति चा समय दाखवते. विंशोत्तरी दशा पूर्ण 120 वर्षाची बिना आयुनिर्णय दिलेली आहे.

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु	
07/08/2025		25/07/2026		25/03/2029		24/05/2032		25/03/2035	
25/07/2026		25/03/2029		24/05/2032		25/03/2035		24/05/2036	
	00/00/0000	गुरु	02/12/2026	शनि	24/09/2029	बुध	18/10/2032	केतु	19/04/2035
	00/00/0000	शनि	05/05/2027	बुध	07/03/2030	केतु	17/12/2032	शुक्र	29/06/2035
	00/00/0000	बुध	20/09/2027	केतु	13/05/2030	शुक्र	08/06/2033	सूर्य	20/07/2035
	00/00/0000	केतु	16/11/2027	शुक्र	22/11/2030	सूर्य	30/07/2033	चंद्र	25/08/2035
	07/08/2025	शुक्र	26/04/2028	सूर्य	19/01/2031	चंद्र	24/10/2033	मंगळ	19/09/2035
शुक्र	27/12/2025	सूर्य	14/06/2028	चंद्र	25/04/2031	मंगळ	23/12/2033	राहु	22/11/2035
सूर्य	20/02/2026	चंद्र	03/09/2028	मंगळ	02/07/2031	राहु	27/05/2034	गुरु	18/01/2036
चंद्र	22/05/2026	मंगळ	30/10/2028	राहु	22/12/2031	गुरु	12/10/2034	शनि	25/03/2036
मंगळ	25/07/2026	राहु	25/03/2029	गुरु	24/05/2032	शनि	25/03/2035	बुध	24/05/2036

सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगळ		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु	
24/05/2036		11/09/2036		13/03/2037		18/07/2037		12/06/2038	
11/09/2036		13/03/2037		18/07/2037		12/06/2038		31/03/2039	
सूर्य	30/05/2036	चंद्र	26/09/2036	मंगळ	20/03/2037	राहु	06/09/2037	गुरु	21/07/2038
चंद्र	08/06/2036	मंगळ	07/10/2036	राहु	08/04/2037	गुरु	20/10/2037	शनि	05/09/2038
मंगळ	14/06/2036	राहु	03/11/2036	गुरु	25/04/2037	शनि	11/12/2037	बुध	17/10/2038
राहु	01/07/2036	गुरु	28/11/2036	शनि	16/05/2037	बुध	26/01/2038	केतु	03/11/2038
गुरु	15/07/2036	शनि	27/12/2036	बुध	03/06/2037	केतु	14/02/2038	शुक्र	22/12/2038
शनि	02/08/2036	बुध	21/01/2037	केतु	10/06/2037	शुक्र	10/04/2038	सूर्य	05/01/2039
बुध	17/08/2036	केतु	01/02/2037	शुक्र	01/07/2037	सूर्य	27/04/2038	चंद्र	30/01/2039
केतु	24/08/2036	शुक्र	03/03/2037	सूर्य	08/07/2037	चंद्र	24/05/2038	मंगळ	16/02/2039
शुक्र	11/09/2036	सूर्य	13/03/2037	चंद्र	18/07/2037	मंगळ	12/06/2038	राहु	31/03/2039

सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र	
31/03/2039		12/03/2040		17/01/2041		25/05/2041		25/05/2042	
12/03/2040		17/01/2041		25/05/2041		25/05/2042		25/03/2043	
शनि	25/05/2039	बुध	25/04/2040	केतु	24/01/2041	शुक्र	25/07/2041	चंद्र	19/06/2042
बुध	13/07/2039	केतु	13/05/2040	शुक्र	15/02/2041	सूर्य	12/08/2041	मंगळ	07/07/2042
केतु	03/08/2039	शुक्र	04/07/2040	सूर्य	21/02/2041	चंद्र	11/09/2041	राहु	22/08/2042
शुक्र	30/09/2039	सूर्य	20/07/2040	चंद्र	04/03/2041	मंगळ	03/10/2041	गुरु	01/10/2042
सूर्य	17/10/2039	चंद्र	15/08/2040	मंगळ	11/03/2041	राहु	26/11/2041	शनि	18/11/2042
चंद्र	15/11/2039	मंगळ	02/09/2040	राहु	30/03/2041	गुरु	14/01/2042	बुध	01/01/2043
मंगळ	05/12/2039	राहु	18/10/2040	गुरु	16/04/2041	शनि	13/03/2042	केतु	18/01/2043
राहु	26/01/2040	गुरु	29/11/2040	शनि	07/05/2041	बुध	04/05/2042	शुक्र	10/03/2043
गुरु	12/03/2040	शनि	17/01/2041	बुध	25/05/2041	केतु	25/05/2042	सूर्य	25/03/2043

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - मंगळ		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध	
25/03/2043		24/10/2043		24/04/2045		24/08/2046		25/03/2048	
24/10/2043		24/04/2045		24/08/2046		25/03/2048		24/08/2049	
मंगळ	07/04/2043	राहु	15/01/2044	गुरु	28/06/2045	शनि	24/11/2046	बुध	06/06/2048
राहु	09/05/2043	गुरु	28/03/2044	शनि	13/09/2045	बुध	14/02/2047	केतु	06/07/2048
गुरु	06/06/2043	शनि	22/06/2044	बुध	21/11/2045	केतु	19/03/2047	शुक्र	30/09/2048
शनि	10/07/2043	बुध	08/09/2044	केतु	20/12/2045	शुक्र	24/06/2047	सूर्य	26/10/2048
बुध	09/08/2043	केतु	10/10/2044	शुक्र	11/03/2046	सूर्य	23/07/2047	चंद्र	08/12/2048
केतु	21/08/2043	शुक्र	09/01/2045	सूर्य	04/04/2046	चंद्र	09/09/2047	मंगळ	07/01/2049
शुक्र	26/09/2043	सूर्य	06/02/2045	चंद्र	15/05/2046	मंगळ	13/10/2047	राहु	26/03/2049
सूर्य	07/10/2043	चंद्र	23/03/2045	मंगळ	12/06/2046	राहु	07/01/2048	गुरु	03/06/2049
चंद्र	24/10/2043	मंगळ	24/04/2045	राहु	24/08/2046	गुरु	25/03/2048	शनि	24/08/2049

चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगळ - मंगळ		मंगळ - राहु	
24/08/2049		25/03/2050		24/11/2051		24/05/2052		21/10/2052	
25/03/2050		24/11/2051		24/05/2052		21/10/2052		08/11/2053	
केतु	05/09/2049	शुक्र	05/07/2050	सूर्य	03/12/2051	मंगळ	02/06/2052	राहु	17/12/2052
शुक्र	11/10/2049	सूर्य	04/08/2050	चंद्र	18/12/2051	राहु	24/06/2052	गुरु	06/02/2053
सूर्य	22/10/2049	चंद्र	24/09/2050	मंगळ	29/12/2051	गुरु	14/07/2052	शनि	08/04/2053
चंद्र	08/11/2049	मंगळ	29/10/2050	राहु	25/01/2052	शनि	07/08/2052	बुध	01/06/2053
मंगळ	21/11/2049	राहु	28/01/2051	गुरु	19/02/2052	बुध	28/08/2052	केतु	24/06/2053
राहु	23/12/2049	गुरु	20/04/2051	शनि	18/03/2052	केतु	06/09/2052	शुक्र	27/08/2053
गुरु	20/01/2050	शनि	25/07/2051	बुध	13/04/2052	शुक्र	01/10/2052	सूर्य	15/09/2053
शनि	23/02/2050	बुध	19/10/2051	केतु	24/04/2052	सूर्य	08/10/2052	चंद्र	17/10/2053
बुध	25/03/2050	केतु	24/11/2051	शुक्र	24/05/2052	चंद्र	21/10/2052	मंगळ	08/11/2053

मंगळ - गुरु		मंगळ - शनि		मंगळ - बुध		मंगळ - केतु		मंगळ - शुक्र	
08/11/2053		15/10/2054		24/11/2055		20/11/2056		18/04/2057	
15/10/2054		24/11/2055		20/11/2056		18/04/2057		18/06/2058	
गुरु	24/12/2053	शनि	18/12/2054	बुध	14/01/2056	केतु	29/11/2056	शुक्र	28/06/2057
शनि	16/02/2054	बुध	13/02/2055	केतु	04/02/2056	शुक्र	24/12/2056	सूर्य	19/07/2057
बुध	05/04/2054	केतु	09/03/2055	शुक्र	05/04/2056	सूर्य	31/12/2056	चंद्र	24/08/2057
केतु	25/04/2054	शुक्र	16/05/2055	सूर्य	23/04/2056	चंद्र	12/01/2057	मंगळ	18/09/2057
शुक्र	21/06/2054	सूर्य	05/06/2055	चंद्र	23/05/2056	मंगळ	21/01/2057	राहु	21/11/2057
सूर्य	08/07/2054	चंद्र	08/07/2055	मंगळ	13/06/2056	राहु	13/02/2057	गुरु	17/01/2058
चंद्र	05/08/2054	मंगळ	01/08/2055	राहु	06/08/2056	गुरु	04/03/2057	शनि	25/03/2058
मंगळ	25/08/2054	राहु	01/10/2055	गुरु	24/09/2056	शनि	28/03/2057	बुध	24/05/2058
राहु	15/10/2054	गुरु	24/11/2055	शनि	20/11/2056	बुध	18/04/2057	केतु	18/06/2058

शुभाशुभ ज्ञान

शुभाशुभ ज्ञान करण्याची आपणास आपल्या मित्र व शत्रुविषयी बोध करते. मूलांक, भाग्यांक व, मित्रांकद्वारे मैत्री व भागीदारी करण्यात फायदा होईल, त्याच प्रमाणे शुभ दिवस व शुभवर्ष प्रगतिकारक ठरेल, शुभग्रहांची, दशा सुद्धा लाभकारक धरते, मित्रलग्न व मित्रराशि लाभदायक अस्ते.

शुभरत्न व धातु तसेच रंग धारण केल्याने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य लाभते, भाग्य रत्न धारण केल्याने भाग्यवृद्धि होते. शुभ वेली कोणत्याही कार्यांचा आरम्भ केल्याने अपेक्षित यश मिलते. इष्टदेव–देवतांचे ध्यान व जप केल्याने मानसिक शक्ति वाढते व यश लवकर मिलते. शुभ पदार्थ, अन्न, द्रव्य इत्यादि चे दान केल्याने ही शुभफल मिलते. व्यापार–उधोग शुभ दिशेला केल्यास त्यात भरभराट होउन अपेक्षत लाभ होतो. शुभ–अशुभ ज्ञानाचा प्रयोग दैनंदिन जीवनात शुभफलदायी ठरतो.

मूलांक	7
भाग्यांक	6
मित्र अंक	2, 3, 6, 7
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुभ दिवस	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	मीन, सिंह
मित्र लग्न	सिंह, मकर, मीन
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, सुनहरा हकीक
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सकाली
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	तांदुल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं. वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं. यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है. ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो. यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो. मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है. बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है. चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है. उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है. साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है. विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है. जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए. जिन्हें 50–75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए. जो रत्न केवल 25–50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए. अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	89%	धनार्जन, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
पन्ना	बुध	81%	पराक्रम, धन, सन्तति सुख
हीरा	शुक्र	77%	धन, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
गोमेद	राहु	69%	व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन
माणिक्य	सूर्य	64%	पराक्रम, सुख
लहसुनिया	केतु	59%	सुख, पराक्रम
पोवले	मंगळ	31%	सन्तति कष्ट, व्यय, दाम्पत्य कष्ट
पुष्कराज	गुरु	19%	धन हानि, दुर्घटना, हानि
मोती	चंद्र	0%	दुर्घटना, पराक्रम हानि

रत्न की शुभता

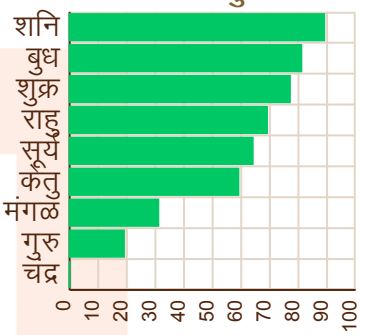

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	पोवले	पन्ना	पुष्कराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	24/05/2036	52%	0%	31%	88%	19%	89%	95%	75%	66%
सूर्य	25/05/2042	77%	6%	44%	81%	31%	64%	77%	56%	44%
चंद्र	24/05/2052	70%	19%	31%	88%	19%	77%	89%	56%	44%
मंगळ	25/05/2059	70%	6%	53%	69%	31%	77%	89%	56%	66%
राहु	25/05/2077	52%	0%	6%	81%	19%	83%	95%	81%	44%
गुरु	25/05/2093	70%	6%	44%	69%	44%	64%	89%	69%	59%
शनि	25/05/2112	52%	0%	6%	88%	19%	83%	100%	75%	44%
बुध	26/05/2129	70%	0%	31%	94%	19%	83%	89%	69%	59%
केतु	25/05/2136	52%	0%	44%	81%	19%	83%	77%	56%	72%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह–नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए नीलम, पन्ना व हीरा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

नीलम आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

हीरा आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

पन्ना आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए गोमेद, माणिक्य एवं लहसुनिया रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मूंगा रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परिक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

पुखराज व मोती रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से

विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

नीलम

आपकी कुंडली में शनि एकादश भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न धारण कर आप निर्लोभी और सुखी व्यक्ति बनेंगे। आपको दीर्घकाल के लिए रोग अपने प्रभाव में नहीं पायेंगे। आपके पास पर्याप्त मात्रा में धन-संपति होगी। सरकार की कृपा से भी धन, मान की प्राप्ति होगी। यह रत्न आपके लिए शुभ होकर आपको वाहनों का सुख देगा। धन संचय में सहयोग करेगा। नौकर चाकरों का सुख देगा। तथा नीलम रत्न प्रभाव से संतान प्राप्ति का विलम्ब दूर होगा। अनेक प्रकार के सुखों को आप प्राप्त करेंगे।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में शनि नवमेश एवं दशमेश है। शनि लग्नेश शुक्र के मित्र एवं योगकारक ग्रह है। आपके लिए शनि सबसे शुभ ग्रह है। शनि रत्न नीलम धारण कर आप अपना भाग्योदय कर सकते है। नीलम रत्न की शक्तियां आपके माता-पिता के सुखों में बढ़ोतरी कर सकती है। यह रत्न शुभ होकर आपको भूमि, भवन, संपति के मामलों का सहज समाधान दे सकता है। नीलम रत्न की शुभता से आपकी आजीविका के कार्य बिना बाधाएं समय पर पूरे हो सकते है। लाभ क्षेत्र की कठिनाईयों को दूर करने में भी नीलम रत्न उपयोगी सिद्ध हो सकता है। विदेश स्थानों से आय प्राप्ति के योग बना सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध तीसरे भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपको व्यापारी सफलता देगा। व्यापारी वर्ग से मित्रवत संबंध स्थापित करेगा। व्यापारादि कार्यों रुचि आती है। आपको भाई-बंधुओं से लाभ प्राप्ति के संयोग बनेगें। रत्न प्रभाव से शौर्य, पराक्रम और वीरता के स्थान पर बुद्धि बल का प्रयोग अधिक करेंगे। लेखन

और कला के पक्ष से भी पन्ना रत्न अनुकूल फल देगा। यह रत्न आपको विचार एवं भाव अभिव्यक्ति की योग्यता देगा। स्मरणशक्ति बढ़ाने के लिये आप यह रत्न धारण कर सकते है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में बुध द्वितीयेश एवं पंचमेश है। पन्ना रत्न धारण कर आप बुध ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते है। पन्ना रत्न आपको उद्धोग-व्यापार द्वारा सम्मान दिला सकता है। पन्ना रत्न बौद्धिक योग्यता से धन संचय दे सकता है। पारिवारिक कलह को दूर करने का कार्य भी पन्ना रत्न कर सकता है। यह रत्न आपको संतान पक्ष से सुखी कर सकता है. तथा यह रत्न आपको विद्या, बुद्धि, प्रतिष्ठा, धन-धान्य, प्रतियोगिताओं में सफलता, श्रेष्ठ पद पर आसीन, विलक्षण रूप से तीव्र बुद्धि एवं राजनैतिक कार्यो से लाभ दिला सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का ९ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंड़ली में शुक्र दूसरे भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए उत्तम रहेगा। हीरा रत्न संयुक्त परिवार विचारधारा को बढ़ायेगा। हीरे की शक्तियों से आप अपने काम निकालने में सफल होंगे। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको व्यवसायिक कुशलता देगा। यह रत्न आपको मधुरभाषी बनायेगा। सेवा क्षेत्रों में आपकी अभिरुचि बनेंगी। शुक्र रत्न हीरा आपके लिए धन और सम्मान प्रदायक भी है। हीरे रत्न की शुभता से आप धनवान, यशस्वी, साहसी एवं भाग्यवान होंगे।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में शुक्र लग्नेश एवं षष्ठेश है। शुक्र आपके लग्न भाव के स्वामी होने के कारण सबसे शुभ ग्रह है। शुक्र रत्न हीरा धारण कर आप अपने स्वास्थ्य सुख को बेहतर कर सकते है। शुक्र रत्न हीरा आपको रोगों से मुक्त रखने में सहयोग करेगा। हीरा रत्न की शुभता से आपके आत्मबल में बढ़ोतरी हो सकती है। रत्न प्रभाव से आप अपने शत्रुओं पर विजय पाने में सफल रहेंगे। हीरा रत्न अनुकूल फलदायक होने के कारण आपके दांपत्य जीवन को सुखी, भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त तथा प्रतियोगिताओं में सफल हो सकते है.

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और

शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु दशम भाव में स्थित है। अतः आप राहु रत्न गोमेद धारण करें। गोमेद रत्न आपको बलवान और निडर बनाएगा। गोमेद की शुभता से आप बुद्धिमान, परोपकारी, सफल, सम्मानित, कीर्तिमान और श्रेष्ठ बनेंगे। रत्न शुभता से आप कार्यक्षेत्र में अपने शत्रुओं को परास्त करने में सफल होंगे। रत्न शुभता आपको व्यापारिक निपुणता और यात्राओं से लाभ देगी। गोमेद रत्न की अनुकूलता आपको अदालती कामों में विजय देगी। इसके अलावा रत्न प्रभाव से आपके कामों में नियमितता आयेगी।

राहु कुम्भ राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि एकादश भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न आपको अनेक क्षेत्रों से आय प्राप्ति के स्रोत देगा। यह रत्न आपको विवाद विजयी, विनोदी और स्वाभिमानी बनाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आप वाहन आदि से सुखी होंगे। परदेश में यह आपका भाग्योदय करेगा। रत्न प्रभाव से आप अत्यधिक महत्वकांक्षी हो सकते है। यह रत्न आपको व्यवसायी, सरकार से प्रतिष्ठा एवं व्यावसायिक लाभ प्राप्त करेंगे। रत्न शुभता आपको अन्न, वस्त्र, अलंकार, धन, पशु, वाहन आदि से सुखी करेगी। इसके अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने पर आप धन-धान्य से युक्त होंगे। यह रत्न आपके अंहकार भाव को भी नियंत्रित रखेगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य तीसरे भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न धारण से आपके पराक्रम, प्रताप एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। यह रत्न आपकी कठोरता और अनुशासनप्रियता में कमी करेगा। आपको उदार, हितकारी बनाने में सहयोग करेगा। इसकी शुभता से आप धैर्यवान, पुरुषार्थी एवं स्वाभिमानी गुणों से परिपूर्ण होंगे। माणिक्य रत्न आपकी आत्मा व चित्त की शुद्धि करेगा। भाई-बहनों का प्रियजन बनायेगा। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में सूर्य चतुर्थ भाव का स्वामी है। सूर्य आपके लिए केन्द्रेश, सुखेश ग्रह है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप घर, जमीन, जायदाद पैतृक सम्पति, वाहन, माता और जमीन के सुख प्राप्त कर सकते है। सूर्य चतुर्थेश होने के कारण माणिक्य रत्न आपके शैक्षिक ज्ञान का भी विकास करने में सक्षम है। सूर्य की शुभता पाने के लिए आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न शुभ होने के कारण आपकी वैचारिक शक्ति, निर्णय शक्ति, योग्यता और कार्यक्षमता देगा। माणिक्य रत्न आपको विद्या, बुद्धि, मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक, अध्यात्मिक और आत्मिक बल प्रदान कर सकता है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया या इसके उपरत्न धारण करने चाहिए। लहसुनिया रत्न आपको धन-धान्य से समृद्ध करेगा। आप अपने दायित्वों का निर्वाह कुशलता के साथ करेंगे। आपका उत्साह भाव देखते ही बनेगा। माता सुख में कुछ कमी हो सकती है। रत्न प्रभाव से आप चंचल स्वभाव के हो सकते है। देश विदेश से धनार्जन योगा। पैतृक धन में वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। घर भूमि भवन के विषयों से सुख की प्राप्ति होगी। लहसुनिया रत्न धारण से केतु ग्रह की शुभता बढ़ती है और अशुभता कम होती है।

केतु सिंह राशि में स्थित है व इसका स्वामी सूर्य तीसरे भाव में स्थित है। अतः

लहसुनिया धारण करने से आप बुद्धि और पराक्रम दोनों का प्रयोग कर सफलता पाने का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको परम प्रतापी और अत्यन्त प्रभावशाली बनाएगा। आपको सब प्रकार के सुखों से युक्त करेगा। इस रत्न को धारण करने पर आपको भाई बहनों का सुख प्राप्त होगा। यह रत्न आपके भाग्योदय में सहायक बन आपको अत्यधिक धन प्राप्त करने के अवसर दे सकता है। रत्न शुभता आपके अरिष्टों का नाश करेगी। एवं यह रत्न आपको दृढ़-विवेकी, योगाभ्यासी बनाएगा और आप विद्वान और तीव्र स्मरण शक्ति के स्वामी होंगे।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल पंचम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मूंगा रत्न से शीघ्र निर्णय के कारण शेयर बाजार में सट्टे के कारण आपको हानि उठानी पड सकती है। इन कारणों से आप तनावग्रस्त और आक्रमक हो सकते है। आपकी संतान को आपके क्रोध का सामना करना पड़ सकता है। मूंगा रत्न प्रभाव आपकी पेट संबंधित परेशानियों को बढ़ा सकता है। स्वभाव की उग्रता वादि-ववाद का कारण बन सकती है। रत्न प्रभाव से शल्यचिकित्सा की स्थिति भी बन सकती है। चोट और दुर्घटनाओं से आपके स्वास्थ्य सुख में कमी की स्थिति बन सकती है। जिम और व्यायामशाला में शक्ति प्रदर्शन आपको कष्ट दे सकता है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में मंगल सप्तमेश और द्वादशेश है। अशुभ भावों का स्वामित्व प्राप्त होने के कारण मंगल आपको शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः आपके द्वारा मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आप निद्रा की कमी का अनुभव करेंगे। यह रत्न आपके वैवाहिक जीवन को तनाव पूर्ण और गृह कलेश से युक्त कर सकता है। रत्न प्रभाव से चोरी, झगड़ा, उपद्रव आदि विषयों में आपकी रुचि अधिक हो सकती है। यह रत्न आपकी कामवासना में उत्तरोत्तर वृद्धि करेगा। आपके पारिवारिक जीवन में अशांति का माहौल हो सकता है। बढ़ते हुए व्यय आपकी ग्रहस्थ जीवन को ओर अधिक कष्टमय बना सकते है। व्ययों का केन्द्र विशेष रूप से ग्रहस्थ जीवन हो सकता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु द्वितीय भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः पुखराज रत्न को धारण करने पर आपको टैक्स निर्धारण की त्रुटि के कारण परेशानी हो सकती है। आर्थिक स्थिति में गिरावट की स्थिति बन सकती है। सरकारी वसूली आपके धैर्य और विवेक को प्रभावित कर सकती है। उद्धोग धंधों की मनोकूल प्रगति नहीं हो पाएगी। यह रत्न सोना, चांदी, सरकारी नौकरी, कानूनी काम, बैंक, शिक्षा संस्थान, देवालय, धर्म संस्था आदि माध्यमों से आपको धन और यश की हानि करा सकता है। धन संग्रह और संचय में सामान्य से अधिक प्रयास करने पड़ सकते है। वाणी में विनम्रता का अभाव आ सकता है। आप सम्मान के प्रति विशेष सजग रहेंगे।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में गुरु अष्टमेश एवं आयेश है। गुरु अष्ट्मेश है इसलिए इस ग्रह का रत्न धारण करना आपको प्रतिकूल फल दे सकता है। गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपको स्वास्थ्य में कमी का सामना करना पड़ सकता है। इस रत्न से व्याधी, आयु में कमी, मानसिक चिंता, नास्तिकता, नकारात्मक विचारधारा और दुर्भाग्य की स्थितियां बन सकती है। इसके अलावा अष्टम भाव का रत्न आपको दरिद्रता, आलस्य, अस्पताल एवं चीरफाड़ आदि जैसी परेशानियां भी दे सकता है। रत्न का अनुकूल न होने के कारण आपको आय, लाभ वृद्धि में आपको योग्यता की कमी का अनुभव हो सकता है। पुखराज रत्न धारण से आप के बड़े भाई से संबंध कुछ प्रभावित हो सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती पहनने पर जल संबंधित रोगों का भय आपको हो सकता है। आपमें ईष्र्या भाव आ सकता है। मातृ सुख बाधित हो सकता है। मोती रत्न प्रभाव से आपको फेफड़ों संबंधित परेशानियां हो सकती है। यह रत्न आपको मनोविकार, चिन्ता नजला जुकाम व खांसी भी दे सकता है। मोती रत्न प्रभाव से आपकी माता के स्वास्थ्य में कमी हो सकती है। ससुराल पक्ष से स्नेह प्रभावित हो सकता है। माता के साथ आपके संबंध अपेक्षाकृत बहुत अनुकूल नहीं रहेंगे। मोती रत्न धारण करने पर आपको किसी बंधन के कारण दुःख का सामना करना पड सकता है। विषय वासना के प्रति आपकी रुचि अधिक हो सकती है।

आपकी वृषभ लग्न की कुंडली में चंद्र तृतीय भाव का स्वामी है। चंद्र ग्रह की शुभता प्राप्ति एवं अशुभता में कमी के लिए आपका चंद्र रत्न मोती धारण करना उचित नहीं होगा। इस रत्न को धारण करने पर आपके द्वारा अभक्ष्य पदार्थो का सेवन एवं आपमें क्रोध भाव की अधिकता हो सकती है। इस रत्न के प्रभाव से आपका आलोचनात्मक व्यवहार, पुरुषार्थ, साहस और शौर्य की कमी आपमें हो सकती है। खांसी तथा छाती के रोग आपको स्वास्थ्य विकार दे सकते है। यह रत्न आपके मानसिक क्लेश बढ़ा सकता है। रत्न धारण के बाद आपके द्वारा किये गये कार्यो में बाहुबल की प्रमुखता हो सकती है। धन संचय में परेशानियां बनी रह सकती है। रत्न प्रभाव आपके स्वास्थ्य सुख में कमी कर सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

शुक्र
(07/08/2025 - 24/05/2036)

शुक्र की दशा में आपका नीलम, हीरा, पन्ना व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न नेष्ट हैं और पुखराज व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(24/05/2036 - 25/05/2042)

सूर्य की दशा में आपका पन्ना, माणिक्य व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा, लहसुनिया व पुखराज रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(25/05/2042 - 24/05/2052)

चन्द्र की दशा में आपका नीलम, पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व मूंगा रत्न नेष्ट हैं और मोती व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(24/05/2052 - 25/05/2059)

मंगल की दशा में आपका नीलम व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, पन्ना, लहसुनिया, गोमेद व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(25/05/2059 - 25/05/2077)

राहु की दशा में आपका नीलम, हीरा, पन्ना व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और पुखराज, मूंगा व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(25/05/2077 - 25/05/2093)

गुरु की दशा में आपका नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, पन्ना, गोमेद, हीरा व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा व पुखराज रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(25/05/2093 - 25/05/2112)

शनि की दशा में आपका नीलम, पन्ना, हीरा व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से

उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और पुखराज, मूंगा व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(25/05/2112 - 26/05/2129)

बुध की दशा में आपका पन्ना, नीलम व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, गोमेद व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न नेष्ट हैं और पुखराज व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(26/05/2129 - 25/05/2136)

केतु की दशा में आपका हीरा, पन्ना व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, गोमेद व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न नेष्ट हैं और पुखराज व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - टरक्वाइज

आपका जन्म वृष राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह शुक्र होता है। टरक्वाइज रत्न शनि ग्रह के लिये धारण किया जाता है और शनि वृष राशि के लग्न के जातकों के लिये भाग्य रत्न होता है। क्योंकि शनि की मकर राशि वृष लग्न से नवम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये भाग्य का प्रबल होना सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि किसी भी किये गये प्रयास या कार्य के परिणाम में भाग्य उत्प्रेरक का कार्य करता है, यह ठीक उसी प्रकार कार्य करता है जैसे किसी रासायनिक क्रिया में उत्प्रेरक का कार्य होता है।

अतः वृष राशि के लग्न वाले जातकों को टरक्वाइज रत्न धारण करके शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है तथा जातक के भाग्य को चमकाता है। वैसे भी शनि सेवक का प्रतिनिधि ग्रह है अर्थात यदि जातक सरकारी या प्राइवेट नौकरी में है तो नौकरी में प्रमोशन व आय वृद्धि के साथ-साथ अधिकार भी प्रदान करता है। साथ ही अन्य कर्मचारीगणों का सहयोग भी प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को सेवकों का सहयोग तथा अधीनस्थ कर्मचारियों की शुभकामनाऐं भी प्राप्त होती हैं। जिसको जोड़ों के रोग हों या लाइलाज रोगी हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा लाइलाज रोगों से मुक्ति दिलाता है।

टरक्वाइज को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है। टरक्वाइज शनि ग्रह का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सायंकाल शनि की होरा में धारण करना श्रेष्ठ होता है। शनिवार के दिन सूर्यास्त के समय शनि की होरा में धारण करना सर्वश्रेष्ठ माना गया है। टरक्वाइज को यदि शनिवार के साथ-साथ शनि के नक्षत्र अर्थात् पुष्य, अनुराधा और उ.भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

टरक्वाइज को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर नीले या काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शनि के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

शनि का मंत्र - ऊँ शं शनैश्चराय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शनि से संबंधित पदार्थ जैसे सरसों का तेल, काला उड़द सवा मीटर काला कपड़े का दान करें तो टरक्वाइज की अंगूठी धारण करना और भी

अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन शनि का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें। शनि मंदिर में शनिदेव की मूर्ति पर सरसों का तेल का अभिषेक करायें तो यह टरक्वाइज की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शनिवार को शनि चालीसा का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

वृष लग्न वाले जातक यदि टरक्वाइज की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं शांतिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली वृष लग्न की हैं। वृषभ लग्न आपको आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी बना रहा हैं। स्थिर लग्न होने से इनका स्वभाव स्थिरता लिये हुए होता है। आप जो भी कार्य करते हैं उसे पूरा करके ही हटते हैं। राशि चिह्न बैल होने की वजह से आप अत्यंत मेहनती हैं तथा लगातार कार्य करते रहना आपका व्यवहार हैं। प्यार से आप कुछ भी कर सकते हैं लेकिन जबरदस्ती करने पर आप बैल की भाँति अड़ियल हो जाते हैं, उस स्थिति में आपसे कुछ भी कराना मुश्किल होता है। पृथ्वी तत्व राशि होने से सहनशीलता का भाव आपमें कूट-कूट कर भरा है। जब तक आपसे सहन होता है, आप करते जाते हैं। योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना आपको पसंद होता है। हर वस्तु को नियत स्थान पर रखना, हाथ में लिया गया प्रत्येक कार्य

पूर्ण करना, प्रत्येक सुन्दर वस्तु की ओर आप आसानी से आकर्षित हो जाते हैं।

त्रिक भावों के स्वामी अपने स्वामित्व के आधार पर स्वयं में अशुभता लिए होते हैं। 6,8,12 भावों को त्रिक भाव के नाम से जाना जाता हैं। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

वृषभ लग्न में छठे भाव व लग्न भाव के स्वामी शुक्र हैं, शुक्र षष्टेश होने पर स्वास्थ्य, ऋण के पक्ष से शुभ नहीं हैं। जीवन में प्रगति की राहों में बाधक बनता हैं। सतत प्रयासों के उपरान्त आप बाधाएं समाप्त करने में सफल रहेंगे।

अष्टम व एकादश भाव के गुरु हैं। इस भाव में बृहस्पति की स्व और मूल त्रिकोण धनु राशि हैं। बृहस्पति की राशि बाधक और गुप्त विषयों से सम्बंधित भाव में होना, आपको आर्थिक, वितीय और प्रबंधकीय विषयों में छोटी, धोखा और अप्रत्याशित हानि दे सकती हैं। जीवन की घटनाओं में शुभता के पक्ष से गुरु की धनु राशि इस भाव में आपके पक्ष में शुभ फल नहीं दे रही हैं।

द्वादश व सप्तम भाव के मंगल हैं। वृषभ लग्न के लिए मंगल विशेष अशुभ ग्रह होते हैं। आपके लग्न में मंगल की एक राशि सप्तम भाव तथा दूसरी द्वादश भाव में आती हैं। द्वादश भाव में मंगल की राशि मंगल के कारक तत्वों में कमी करती हैं। सप्तमेश मंगल दुर्घटनाओं, शल्यचिकित्सा, लड़ाई-झगड़ों के योग बना कर ऊर्जा शक्ति की हानि करा सकता हैं।

अष्टम भाव संकट, चिंता और दुर्भाग्य का स्थान हैं, इस भाव में स्थित होने से चन्द्र बलहीन हो गया हैं। चन्द्र की इस स्थिति से आपको शिशु अवस्था में गंभीर स्वास्थ्य संकटों का सामना करना पड़ा होगा। मानसिक और दैहिक निर्बलता के कारण असफलता और अन्य कष्ट भोगने पड़ सकते हैं। निर्धनता, मातर कष्ट, घर, जमीन, जायदाद और पैतृक सम्पति से सम्बंधित विवाद हो सकता हैं। चन्द्र के प्रभाव से संपति सुख, विदेश स्थानों में हानि, अपयश पीड़ित हो सकते है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 3, 5, 6 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विषयी माहिती

गोचर शनि जेव्हां कुंडलीतीत चंद्राला बारावा, पहिला व दूसरा येईल, तेव्हा साडेसाती सुरु होते. कुंडलीतीत चन्द्राला गोचर शनि चौथा व आठवा आला असता, ढैय्या म्हणजे अडीचकी सुरु होते. साडेसाती चा प्रभाव साडेसात वर्ष व ढैय्या चा प्रभाव अडीच वर्षें मानला गेला आहे साडेसाती चा प्रभाव सामान्यापणे शारिरीक, मानसिक व आर्थिक त्रासाचा जातो तर काहीवेलप आश्चर्यचकित प्रगतिही या कालात होते.

सामान्यापणे मनुष्याच्या जीवनात साडेसाती तीन वेला एते– पहिल्यांदा बालपणि, दूस्रयांदा तरुणपणि व तीस्रयांदा म्हातारपणि. पहिलया साडेसाती चा प्रभाव शिक्षण व आई–वडिलावर पडतो. दुस्रया साडेसाती चा प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति व कुटुंबावर पड़तो. तिसरया साडेसाती चा प्रभाव शारिरीक आरोग्यावर पडतो.

खाली दिलेल्या कोष्टकवरुन साडेसाती चा काल व प्रत्येक अडीचकी (ढय्या) चे शुभाशुभ फलासंबंधीची माहिती समजू शकेल.

प्रथम चक्रः

चतुर्थस्थान चरण	07/08/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
अष्टमस्थान चरण	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------

द्वितीय चक्रः

चतुर्थस्थान चरण	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
अष्टमस्थान चरण	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसातीचा पहला चरण	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	----------

तृतीय चक्रः

चतुर्थस्थान चरण	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	----------
अष्टमस्थान चरण	02/07/2093-18/08/2095	----------	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	03/12/2102-29/11/2105	----------	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	29/11/2105-25/02/2108	29/07/2108-23/11/2108	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	25/02/2108-29/07/2108	23/11/2108-17/02/2111	----------

शनि चा ढैया फल

ढैया चा प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थस्थान चरण	शुभ	धनार्जन
अष्टमस्थान चरण	सम	पराक्रम हानि
साढ़ेसातीचा पहला चरण	सम	दाम्पत्य कलह
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	अशुभ	दुर्घटणा पासून सुरक्षा
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	शुभ	भाग्योदय

साढेसाती वर उपाय

शनि च्या साडेसाती दरम्यान होणार्या अशुभ प्रभावांची तीव्रता कमी होना साठी दान, पूजन व्रत, मंत्रोच्चार आदि उपाय आहेत. शनिवारी काली काम्बल, काली उड़द, काले–तिल, कालयारंगाची चर्मची चप्पल, काले कापड़, लोखंडाचे दान करावे. शनिदेवाची पूजा, दर्शन व शनिवार चा उपवास करावा उपावास च्या दिवशी फले उड़द चा खाध वस्तु, हरभरे, बेसन, काले तिल, काले मीठ या वस्तुंचेच सेवन करावे पाईजे. स्वतः किवां योग्य गुरुजीकड्न खालील शनिमंत्रचा 19000 जप करुन ध्यावा.

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि चा साडेसातीत शारीरिक, मानसिक व कौटुंबिक शान्ति आणि समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता व अंगीकृत कार्यात प्रगति होण्या साठी खालील महामृत्युंजय मंत्रचा 125000 जप स्वतः करावा किंवा योग्य पूरोहिताकड्न करवून ध्यावा.

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

किवां खालील मंत्रचा कमीत कमी 108 वेला जप करावौं.

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

साढ़ेसाती च अशुभत्व कमी करुन् शुभत्व वाढवण्या साठी 5–1/4 रत्ती वजना च नीलम रत्न पंचधातु उजव्या हाताचा मध्ल्या बोटात धारण करावे. घोडायाच्या नालेची किंवा बोटीच्या कीलची अंगठी मधल्या बोटात वापरवी.

अंगठी किंवा पेन्डन्ट शुक्ल पक्षा चा शनिवारी सायंकाली सूयदृस्ता चा अर्धातास पूवदृ धारण करावी. पुष्य, अनुराधा किंवा उतरा भाद्रपदा या नक्षत्र पैकी जे नक्षत्र शनिवारी असेल त्या दिवशी अंगठी धारण करावी. अंगठी धारण करण्या पूवदृ शुद्ध निरसे दूध व गंगाजलानें अंगठीस अभिषेक करावा. धूप–दीप लावून पूजा करावी व खालील मंत्र 108 वेला जपून अंगुठी धारण करावी.

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगठी धारण केल्या नंतर शनि च्या वस्तूंचे दान करावे या मुले शनिचा अशुभ परिणामांची तीव्रता कमी होईल व आपल्या सुख–शान्ति–समृद्धि ची वाढ़ होईल.

मांगलिक विचार

जेह्वा वर किंवा कन्या ची कुंडलीत मंगळ, लग्न चतुर्थ, सप्तम, तसेच द्वादश भाव असेल तेह्वा असे जातक मंगळ दोषी होतात.।। यथोक्तम।। लग्ने व्यये च पातले जामित्रे चाष्टमे कुजे. स्त्री भर्तुविनाशाय भर्तुः पत्नी विनाशयेत्. मांगळिक दोष लग्न पासून जास्ती प्रबल होतात, पण चंद्रमा पासून यांचा दोष कम आहे. जर शस्त्रनुसार वर अणि कन्या चा मांगळिक दोष भंग होतात तर यांचे दम्पती जीवन सुखी अणि प्रसन्नता युद्ध होणार. यांचे विपरीत बगैर दोष भंग झाले, मांगळिक वर कन्या ला जीवनां चे अनेक अनावश्यक त्रास तसेच अडचणांचे सामना होणार. अतः विवाहा पूर्वी शुद्ध कुंडली मिलान करून हा दोष उचित निवारण करून दांपत्य जीवन शुरू कराय ला पहिजे. ज्यापासून जीवनात शान्ती तसेच संपन्नता होणारी.

****

तुमचे जन्म कुंडली मधे मंगळ ची स्थिति पंचम भावात आहे पंचम भाव–संतति उच्च शिक्षा, तसेच बुद्धि चा भाव आहे, अतः मंगळ प्रभाव पासून आपण पुत्र संतति युद्ध रहणारे म्हणून तुम्हाळा जीवन साठी सुख भेंटणार. पण संतति प्राप्ति साठी काही उशीर होउ सकतात जीवनात आपण स्वतः परिश्रम आणि समज पासून उच्च शिक्षा प्राप्ति कराय साठी नेहमी प्रयत्न शील रहणारे यद्यपि या मधे कधीं–मधीं अड़चणे उत्पन्न होउ सकतात पण यांचा सामना साठी आपण सफळ रहणारे. तुमची तीव्र बुद्धि होणारी तसेच कधीं–मधीं तीव्रता चा भाव प्रदर्शित होणार, तुमची संवय कोण पण कार्य लवकर शुरू कराय ची होणारी. तसेच सरकारांचे मोठे आफीशर बरोबर चांगळे सम्बंध रहणार तसेच काही फायदे पण होणारे. पंचम भावात स्थित मंगळ ची चतुर्थ दृष्टि अष्टम भाव वर रहणारी या मुळे तुम्हाला उष्णता, पित्त, रक्त विकार वगेरे ची कधीं–मधीं त्रास होउ सकतात पण यांचे प्रभाव पासून तुम्हाळा विशेष किंवा एका–एकी धन लाभ चा योग आहे. सांसारिक विशेष कार्य मधे कधीं–मधीं अडचणे येउ सकतात पण यांचे सामना कराय साठी आपण सफळ होणारे, एकादश भाव वर मंगळ ची दृष्टि आर्थिक उन्नति साठी शुभ रहणारी ह्या पासून जीवनात धन अर्जित करणारे तसच श्रीमंत सारख्या ख्याति प्राप्त होणारी तुमचे मिळकत चा श्रोत पण जास्ती रहणार समाजातीळ सम्मान ची वृद्धि होणारी. द्वादश भाव वर मंगळ ची दृष्टि होण्या मुळे तुमी कधीं–मधीं खर्चे जास्ती करणारे असे तुमचे शुभाशुभ कार्य मधे होणार. तसेच वाम डोण्या मधे कोणी पण चिन्ह किंवा कमजोरी पण होउ सकतात पण राजनैतिक लाभ सामान्य आणि सुखी, होणार. पंचम भावात मंगळ प्रभाव पासून आपण सुखी जीवन साठी सफळ आणि समर्थ होणारे.

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुडली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

तृतीय भाव में सूर्य हो तो जातक, सरकार से सम्मान प्राप्त, कवि, भाई और सम्बन्धियों के कारण दुःखी, पराक्रमी, प्रतापशाली, लब्धप्रतिष्ठ एवं बलवान् होता है।

कर्कराशि में रवि हो तो जातक कीर्तिमान, लब्धप्रतिष्ठ, कार्यपरायण, चंचल, साम्यवादी, कफरोगी, इतिहासज्ञ एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य तृतीय भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा यदा कदा ही शारीरिक अस्वस्थता रहेगी। साथ ही उनकी आयु भी उत्तम रहेगी। पिता से आप जीवन में समस्त शुभकार्यों में सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम बढाने के लिए वे नित्य यत्नशील रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगे तथा अवसरानुकूल आपको उचित उपदेश तथा निर्देश भी देते रहेंगे।

आप भी उनके प्रति हार्दिक स्नेह एवं सम्मान का भाव रखेंगे तथा प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी कुछ मतभेदों को छोडकर सामान्य रूप से मधुर ही रहेंगे। उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा जीवन में उनको पूर्ण आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे उन्हें कोई दुःख या कष्ट न हो। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्यतया शुभ ही समझे जाएंगे।

चन्द्र

आठवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कामी, व्यापार से लाभवाला, विकास्त प्रमेहमरोगी, वाचाल, स्वाभिमानी, बन्धन से दुखी होने वाला एवं ईर्ष्यालु होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ

सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

मंगल

पंचम भाव में मंगल हो तो जातक बुद्धिमान्, चंचल, गुप्तरोगी, कृशशरीरी, रोगी, विशेष रूप से उदररोगी, व्यसनी, कपटी, उबुद्धि एवं सन्तति-क्लेश युक्त होता है।

कन्या राशि में मंगल हो तो जातक सुखी, शिल्पज्ञ, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहार कुशल होता है।

आपके जन्म काल में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से शारीरिक रूप से व्याकुलता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेक्षा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। वे सुख दुःख में हमेशा आपका सहयोग करेंगे एवं आवश्यकतानुसार आपको आर्थिक या अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी वे आपको यथोचित सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प समय के लिए कटुता या तनाव की अनुभूति होगी। साथ ही आप सुख दुःख में उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार के समस्त वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं आपसी सहयोग से एक दूसरे को सुख प्रदान करेंगे।

बुध

तृतीयभाव में बुध हो तो जातक सद्गुणी, कार्यदक्ष, परिश्रमी, मित्रप्रेमी, भीरू, धर्मात्मा, यात्राशील, व्यवसायी, चंचल, अल्पभ्रातृवान्, विलासी, सन्ततिवान्, कवि, सम्पादक, सामुद्रिकशास्त्र का ज्ञाता एवं लेखक होता है।

कर्क राशि में बुध हो तो जातक नीतिकुशल, सूक्ष्माही, अत्यन्त कामुक, छोटाकदवाला, अनैतिक चरित्र, अनिश्चित स्वभाव, वाचाल, गवैया, परदेशवासी, प्रसिद्ध एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

द्वितीयभाव में गुरु हो तो जातक मधुरभाषी, सम्पत्ति और सन्ततिवान्, सुन्दरशरीर, सदाचारी, पुण्यात्मा, सुकार्यरत, लोकमान्य, राज्यमान्य, व्यवसायी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं भाग्यवान् होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं

व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

द्वितीयभाव में शुक्र हो तो जातक भाग्यवान्, साहसी, समयज्ञ, मिष्टान्नभोजी, यशस्वी, लोकप्रिय, जौहरी, दीर्घजीवी, कवि, कुटुम्बयुक्त, सुखी एवं धनवान् होता है।

मिथुन राशि में शुक्र हो तो जातक कवि, साहित्यिक, चित्रकला निपुण, साहित्यिक स्रष्टा, प्रेमी, सज्जन, लोकहितैषी धनी, उदार, सम्मानित, कुशाबुद्धि, विद्वान् एवं परस्त्रियों में रुचि रखने वाला होता है।

शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्त्ता एवं आलसी होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

शारीरिक सौष्ठ, व्यक्तित्व आणि प्रकृति

आपला जन्म वृषभ लग्नामध्ये झाला असल्याने आपण शारीरिकष्ट्या सुंदर व आकर्षक असाल व इतरेजन आपल्या व्यक्तिमत्वाने प्रभावित होतील. तुम्च्या स्वभावात धैर्य व सहिष्णूता असेल व त्याचबरोबर वाणीमध्ये मिठास असेल. कष्टाने हाती घेतलेले काम पूर्ण करणे हा आपला गुण आहे. या गुणामुळे वरिष्ठांना प्रिय, विद्वान व धनऐश्वर्याने युक्त होऊन आनंदाने आपला काळ घालवाल.

आरोग्य आपले सामान्यपणे चांगले राहील, पण आजारी पडलात तर बरे होण्याला काळ जाईल. कधी कधी आपल्या हट्टी स्वभावाचेही दर्शन घडवाल आणि इतरेजनांपेक्षा आपल्याच विचारांना योग्य समजाल. त्यामुळे इतरेजनांच्या मनामध्ये तुमची छबी प्रभावित होऊ शकते. आराम करणे आपल्याला अतिशय आवडते. आपले वैशिष्ट्य म्हणजे एखादे काम हाती घेतले असेल तर ते पूर्ण होईपर्येत सोडणार नाही, अन्यथा, त्याचा विचार करण्यातच काळ घालवाल, त्यामुळे कधी कधी हानी होण्याचा संभव आहे, त्यामुळे अशी वृत्ती प्रयत्नपूर्वक सोडणे हितकारक ठरेल. शत्रूसुद्ध ा वेळोवेळी तुम्च्यासमोर अडचणी निर्माण करण्याचा प्रयत्न करतील, पण कोणाचीही पर्वा न करता आपण आपल्या मार्गाने जाण्याकडे तुमचा कल राहील.

कला व सौंदर्याचे तुम्ही पारखी आहात व कविता करण्याकडेसुद्धा तुमचा कल असू शकतो. त्याचबरोबर धनसंग्रह करण्याकडे तुमचा कल राहील. सांसारिक व भौतिक सुखसुविधासंबंधी आपल्या मनात तीव्र लालसा असेल व त्या प्राप्त करण्याकडे तुमचा नित्य प्रयत्न व परिश्रम कराल. एक विद्वान म्हणून आपल्या समाजात मान असेल. संधी दिसताच राजनीतिमध्ये रस निर्माण होईल, पण महत्वाचे नेतृत्वपद मिळण्याची शक्यता कमी आहे, पण सक्रिय कार्यकत्र्याच्या रूपात आपले योगदान प्रामाणिकपणे द्याल.

शांती व सहनशीलता या तुम्च्या स्वाभाविक गुणांमुळे लोक प्रभावित होतील आणि तुमचे मित्र बनण्यास उत्सुक असतील. त्याचबरोबर स्वकुटुंब, मित्र व भावंडांच्या भलाईसाठी तुम्ही नेहमी यत्नशील राहाल व परिश्रमपूर्वक भौतिक सुखसुविधा प्राप्त करून आयुष्य सुख व आनंदाने व्यतित करण्याचा प्रयत्न कराल. यथोक्तम–

गुणागुणीः स्याद् द्रविणेन पूर्णो भक्तो गुरूणां हि रण प्रियश्च।
धीरश्च शूरः प्रियवाकः प्रशान्तः स्यात्पुरूषो यस्य वृषे विलग्ने।।

– जातकाभरणम

अर्थ – वृषभ लग्नाचा जातक विद्वान, धनवान, गुरूजनांचा आदर करणारा, धैर्यवान, शूर, प्रियवक्ता आणि शांत हृदयाचा असतो.

धन, कुटुंब, डोळा आणि वाणी

आपल्या जन्मसमयी द्वितीय भावामध्ये शुक्राची मिथुन राशी उदित होत होती. याच्या प्रभावामुळे आपली प्रवृत्ति धनसंग्रह करण्याची असेल आणि वर्तमान व भविष्यासाठी प्रचुर प्रमाणात धनार्जन करून त्याचा संग्रह केल्याने आपली आर्थिक स्थिती संतुलित राहील. त्याचबरोबर संपत्ती किंवा सुवर्णादि धातूंमध्ये गुंतवणूक करून त्यापासून भरपूर लाभ प्राप्त कराल. आपले कौटुंबिक जीवन सुख व शांतीयुक्त असेल आणि कुटुंबाच्या सुखासाठी आपण सदैव प्रयत्नशील राहाल आणि कौटुंबिक सहकार्य आपल्याला सदैव राहील.

सर्व स्वाद आपल्याला आवडतात, पण मिष्ठान्नाप्रति आपली अधिक रूची राहील. हा भाव वाणीचे प्रतिनिधीत्व करत असल्याने आणि त्याचा स्वामी बुध असल्याने आपल्या वाणीमध्ये मृदूता व प्रभाव राहील आणि इतरेजनांना आपल्या वाणीने प्रभावित करण्यास समर्थ असाल. त्याचबरोबर विचार अभिव्यक्ती कौशल्याने कराल पण काळानुसार आपल्या विचारांमध्ये बदलसुद्धा होत जातील. आतिथ्यशीलता आपल्या मनामध्ये सदैव राहील. याव्यतिरिक्त स्त्रीवर्गापासून आपल्याला उचित लाभ वेळोवेळी लाभेल आणि वाहन आणि बहुमूल्य रत्नांची प्राप्तीसुद्धा होईल. धार्मिक व सज्जन लोकांशी मैत्री करण्याकडे आपली प्रवृत्ती राहील.

आई, वाहन, भौतिक ऐश्वर्य, भूमि आणि शिक्षा

आपल्या जन्मसमयी चतुर्थ भावात रविची सिंह राशी उदित आहे, त्यामुळे आपल्या मातोश्री एक आदर्श व महत्वाकांक्षी स्त्री असतील आणि कुटुंबाचे पोषण उत्तम करेल आणि कुटुंबातील कुणाही व्यक्तीला तक्रार करायला जागा ठेवणार नाही. त्या एक यशस्वी सामाजिक कार्यकर्ता असतील आणि समाजामध्ये सर्व लोक त्यांच्यामुळे प्रभावित होतील व त्यांना यथोचित सन्मान देतील. कौटुंबिक सुख शांती व समृद्धिसाठी नित्य प्रयत्न करणाऱ्या असतील आणि आपल्या इच्छांना मुरड घालून कुटुंबाला पूर्ण वाहून घेतील.

आपले घर शहरातील महत्त्वाच्या भागात असावे अशी असेल आणि आपले घरसुद्धा सुंदर व आकर्षक असेल. त्याचबरोबर घर स्वच्छ ठेवून त्यामध्ये आधुनिक साजसजावटीने घर सजवण्याकडे आपला कल राहील. घरामध्ये आधुनिक संसाधने असतील. घरातील वस्तू अव्यवस्थित झाल्या तर संताप न करता स्वतःच त्या ठीकठाक करण्याची आपली प्रवृत्ती असेल. कालानुरूप आपल्याला वाहनसुख प्राप्त होईल आणि जीवनस्तर जसा बदलेल तसे वाहनसुद्धा बदलेल. प्रशासकीय सेवेमध्ये आपल्याला वाहनसुख प्राप्त होईल. पैतृक संपत्तीसुद्धा आपल्याला मिळे आणि शिक्षणसुद्धा चांगले होईल. आपल्या स्वभावात तेजी असेल आणि कन्या संतती अधिक असेल.

बुद्धि, सन्तान आणि लग्न सम्बन्ध

आपल्या जन्मसमयी पंचम भावात बुधाची कन्या राशी उदित होती. त्याचा प्रभावामुळे आपण एक बुद्धिमान व्यक्ती असाल आणि वैदिक साहित्याचे ज्ञान प्राप्त कराल. आपण संसारात महत्वाच्या अशी शुभ कार्ये विनाविलंब पूर्ण करण्याचा प्रयत्न कराल. बुधाच्या राशीच्या प्रभावामुळे आपण विज्ञान, गणित, लेखन किंवा अध्ययनामध्ये विशेष रूची दाखवाल त्याचबरोबर पाककौशल्यामध्ये सुद्धा रूची राहील. सुखी दाम्पत्य जीवनासाठी आपल्या जीवनसाथीची निवड करताना आपल्या बुद्धिमत्तेची चुणूक दाखवाल. त्याचबरोबर वार्तालाप करण्यामध्ये आपण चतुर असाल आणि इतरेजनांना आपल्या गप्पांनी प्रसन्न कराल.

आपल्याला संतती सीमित असेल आणि त्यांच्या शिक्षण व आरोग्याविषयी आपण सजग असाल आणि आवश्यक असेल तेव्हा पैसाही खर्च कराल. संतती तुमच्या वृद्धावस्थेमध्ये आपली पूर्ण काळजी घेईल त्यांच्याकडून आपल्याला काही कष्ट होणार नाहीत. आज आपल्याला जे काही मिळत आहे ते पूर्वपुण्याईने मिळते यावर आपली पूर्ण श्रद्धा असेल. त्यामुळे प्रसन्न व संतुष्ट वृत्ती असेल. आपल्याला कन्या संतती अधिक व पुत्र संतती कमी असेल आणि तेसुद्धा आयुष्यामध्ये सुख व वैभवपूर्ण जीवन जगतील.

दम्पति, विवाह आणि साझेदार

आपल्या जन्मसमयी सप्तम भावामध्ये मंगळाची वृश्चिक राशी उदित होती, त्याच्या प्रभावामुळे आपले दाम्पत्य जीवन मधुर व शांतीपूर्ण राहील तसेच आयुष्य सुख व उन्नतीदायक जाईल. या राशीच्या प्रभावामुळे आपल्याला जीवनसाथी प्रेमळ व शांत स्वभावाच्या मिळेल.

तुमच्या जीवनसाथीला तुमच्या प्रेमसंबंधांविषयी शंका असेल, पण अशा गोष्टी आपण गुप्त ठेवणार नाही आणि तसे काही झाले तर तुम्ही तुमच्या पत्नीला स्पष्टपणे सांगाल. तुमचा कल सुखद व शांत कौटुंबिक जीवन व्यतित करण्याकडे असेल. तुम्ही घराकडे कधीही दुर्लक्ष करणार नाही आणि पत्नीच्या गरजांकडेही पूर्ण लक्ष द्याल, ज्यामुळे आपापसात प्रेम व सद्भाव कायम राहील. तुम्हाला आपली पत्नी चांगले कपडे नेसावी आणि प्रसन्न मुद्रेमध्ये असावे असे वाटत असते. कन्या, मकर, कर्क, वृश्चिक व मीन राशी किंवा लग्नाच्या जातकाबरोबर विवाह केल्यास आपले जीवन सुखकर जाईल. भौतिक साधने, वित्तसंबंधी कार्य, कृषि, संगीत, महिलांची वस्त्रप्रावरणे याकडे आपला जास्त रस आहे, आणि अशा व्यवसायामधून आपल्याला उचित लाभ होऊ शकतो. त्याचबरोबर ज्योतिष, तंत्र मंत्र आदि व्यवसायसुद्धा आपण स्वीकारू शकता.

आपली पत्नी निरोगी, सुडौल शरीराची असेल आणि अनेकानेक कला तिला येत असतील आणि सौभाग्यपूर्ण आपले जीवन व्यतित करेल.

पिता, व्यवसाय आणि सामाजिक स्थिति

आपल्या जन्मसमयी दशम भावामध्ये शनिची कुंभ राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण एखाद्या विख्यात कंपनी किंवा उद्योगामध्ये कार्यरत राहाल. खाणी, कंत्राटदारी किंवा खनिज आयातीमध्ये आपल्याला रूची राहील. याव्यतिरिक्त घरबांधणी, मेकॅनिकल इंजिनिअरिंग, तंत्र व स्टीलसंबंधी व्यापार किंवा कार्यक्षेत्राशी आपला संबंध असेल. त्याचबरोबर आपल्याला गुप्तचर विभागाशी संबंधित काम मिळू शकते. तुम्हाला आधुनिक भौतिक साधनांच्या व्यापारामध्ये रूची राहील आणि त्यातून भरपूर लाभही होईल. गुंतवणुकीतूनही आपल्याला लाभ होऊ शकतो किंवा वित्त उद्योगाशी आपला संबंध राहील. स्वकष्टाने पैसा कमवाल आणि जुगार किंवा सट्टा इत्यादिंमध्ये आपल्याला रस राहील आणि कधी कधी आपल्याला लाभसुद्धा होऊ शकतो, विशेषतः बुधाच्या दशेमध्ये याची प्रचिती येईल.

आपले वडील एक बुद्धिमान व्यक्ती असतील आणि त्यांची स्मरणशक्ती उत्तम असेल. त्यांचा अचूक तर्कांनी लोक प्रभावीत असतील आणि त्यांना सन्मान देतील, त्याचबरोबर ते स्पष्टवक्ते आणि निःस्वार्थी प्रवृत्तीचे असतील. नैतिक कार्य कोणतेही असले तरी ते करण्यास तत्पर असतील.

राजकारणाचा आधार शनि ग्रह असल्याने त्याच्या दशा–अंतर्दशेमध्ये आपण राजकारणामध्ये प्रवेश करू शकता त्याचबरोबर या काळात राजकारण किंवा सरकारकडून अपेक्षित मदत व लाभही प्राप्त होईल. याचबरोबर तुम्ही कार्यमग्न, चतुर, धर्मावर श्रद्धा ठेवणारे असाल पण त्याचबरोबर शत्रूही अधिक असतील.

फलादेश - 2025

यंदा गुरु गोचरीने सप्तम भावात असेळ. म्हणून हे वर्ष तुमच्यसाठी चांगळे असेळ. व्यापार किंवा नोकरीत वर्ष तुमच्यासाठी चांगळे असेळ. व्यापार किंवा नोकरीत उन्नती होईळ किंवा अचानक ळाभ संभवतो. त्याचबरोबर बेरोजगारांना काम मिळण्याची शक्यता आहे. यंदा अविवाहितांचे विवाह होण्याचा योग आहे. कौटुम्बिक सुखासाठी हे वर्ष चांगळे असेळ. पत्नीकडून सहकार्य मिळेळ. परस्पर संबंध उत्तम रहातीळ. ह्या काळात समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ व सन्मान मिळवाळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर खर्च पण वाढेळ. अन्य गोचरफळे व दशाफळे पण चांगळी असल्यानी हे वर्ष चांगळे व भाग्यकारक आहे.

यंदा शनी चतुर्थ भावात असेळ. त्याचा प्रभाव सामान्यतः चांगळा असेळ. नोकरी व व्यापारात उन्नतीची शकयता आहे. राजकारणात संतुष्टी मिळेळ. भावंडे व कुटुंबातीळ ळोकांचे सहकार्य मिळेळ. आईची प्रकृती चांगळी असेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे जाईळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. यंदा एरवादे नवीन कार्य किंवा घर वा इस्टेटीसंबंधी कार्य सुरु करण्याची शक्यता आहे. सुखातीळा अडथळे आळे तरी भविष्यात ळाभ होईळ.त्याचबरोबर यंदा अन्य गोचर व दशाफळ अनुकूळ असेळ त्यामुळे सफळता मिळेळ. पण शनीच्या प्रभावाने मानसिक तणाव निर्माण होऊ शकतो. व महत्वाच्या कार्यात विलम्ब संभवतो. म्हणून हा प्रभाव कमी करण्यासाठी नियमिपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मंवल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे सर्व अडचणी दूर होतीळ व प्रसन्नता मिळेळ.

यंदा राहू गोचरीने तिसन्या भावात व केतू नवत्या भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे जाईळ. यंदा मान, प्रतिष्ठा व पराक्रमात वाढ होईळ. सर्व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. त्याचबरोबर शत्रू व प्रतिस्पर्ध्यांचा पराभव होऊन ते समर्पण करतीळ. सर्व मानसिक चिंता संपतीळ. आर्थिक–दृष्टया ह्या काळात उन्नती होईळ. भरपूर प्रमाणात धनप्राप्ती संभवते. कार्यक्षेत्रात ह्या काळात स्वकष्टाने सफळता मिळवाळ. त्याचबरोबर मित्रांकडून सहकार्य मिळेळ. बांधवाविषयी चिंता उत्पन्न होऊ शकते. नवमस्थ केतू मुळे वेळप्रसंगी कार्यसिद्धीसाठी परिश्रम करावे ळागतीळ. पण अन्य गोचर व दशाफळ अनुकूल असल्याने हे वर्ष सौभाग्यकारक असेळ.

शुक्र ची महादशा मधीं मंगळ चा अंतर 07/08/2025 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर राहु चा अंतर प्रारंभ होणार। मंगळ पंचम भाव मधीं कन्या राशि मधी स्थित आहे। पण राहु दशम् भाव मधीं कुम्भ राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी सामान्य शुभ आहे तसेच शुभ अवसर प्राप्त होणार. आर्थिक स्थित चांगली आणि धन लाभ प्राप्त करणारे व्यवहार अनुसरण क न लाभ आणि उन्नती मार्ग वर प्रवास करणारे. नोकरी मधे उन्नती होऊ सकतो मोठे अधिकारयां पासून चांगले संवन्ध स्थापित होणार कुटुम्ब मधे परस्पर सहयोग रहणार सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होणारी. ह्या प्रकारी शुभ समय चा सदुपयोग करावे.

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूळ रहणार अतः असे समय वर धैर्य आणि उत्साह उत्पन्न होणार. कुटुम्ब शान्ती आणि परस्पर मधुर सम्बन्ध, सहयोग रहणार व्यापार,

कार्य क्षेत्रातीळ फायदे होणार. नौकरी मधे उन्नति होऊ सकतो आणि मोठे अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध स्थापित होणार. समाजातीळ यश आणि वांछित सफळता भेंटणारी तसेच साहित्य, कळा, वगेरे मधे चि उत्पन्न होणारी. शारीरिक आणि मानसिक स्थिति चांगली रहणारी काही तरी प्रवास होणारी तसेच प्रवास पासून फायदे होणार. नवीन प्रयोजने सफळ होणारी तसेच सांसारिक वस्तु खरेदी साठी खर्चे होणार पण आर्थिक स्थिति अनुकूळ रहणारी अतः असा समय सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2026

गोचरवश यंदा गुरु अष्टम भावात असेळ. म्हणून हे वर्ष तुमच्यासाठी मध्यम स्वरूपाचे असेळ. शारीरिक व मानसिकदृष्टया सुदृढ़ असळात तरी वेळप्रसंगी चिंता अनुभवाळ. कष्ट व पराक्रमाने सांसारिक कार्यात सफळता मिळवाळ. त्याचबरोबर नोकरी, राजकारण किंवा व्यापारात विरोधकांकडून अडथळे आल्यानी त्रास होईळ. पण परिश्रमपूर्वक त्यावर मात कराळ. यंदा एरवादा खटळा सुरु होऊ शकतो. आर्थिक स्थिती मध्यम स्वरूपाची असेळ. खर्च वादतीळ. ह्या काळात विशिष्ट ळाभ होण्याची संभावना आहे. त्याचबरोबर ज्योतिष, तंत्रमत्रादिवर श्रद्धा वाढेळ व ज्ञानार्जन कराळ.अन्य गोचर फळ शुभ तर दशाफळ मध्यम स्वरूपाचे असेळ. म्हणून परिश्रमपूर्वक सफळता मिळवाळ. तुम्ही नियमितपणे गुरुची पूजा तथा दान करावे.

गोचरीने यंदा शनी चवथ्या भावात आहे. त्याच्या प्रभावाने हा काळ मध्यम स्वरूपाचा असेळ. सांसारिक कार्ये परिभमाने संपन्न कराळ. भावंड व कुटुंबाकडून कमीअधिक प्रमाणात सहकार्य मिळेळ. आईची प्रकृती पण मध्यम असेळ. आर्थिक परिस्थिती सामान्य असेळ व धनप्राप्ती बरोबरच खर्च पण होतीळ. पण आर्थिक परिस्थितीवर त्याचा विशेष परिणाम होणार नाही. व्यापारात किंवा नोकरीत प्रगती होईळ. कर्ज होऊन तुम्ही घर बांधू शकता. जयामुळे सध्या अडचणी येतीळ पण भविष्यात ळाभ होईळ.ह्या काळात अन्य गोचर शुभ असेळ पण दशाफळ विशेष अनुकूळ नसेळ. शनीच्या प्रभावामुळे वेळप्रसंगी महत्वाच्या कामात अडचणी येऊ शकतात. ज्यामुळे मानसिक ताण येईळ. म्हणून अशुभ फळे कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे अशुभ प्रभाव कमी होऊन शुभता वाढेळ.

गोचरीने यंदा राहू तृतीयात व केतू नवभात असेळ. त्यामुळे ह्या काळात पराक्रमात व प्रतिष्ठेत वाढ होईळ. सर्व ळोक प्रभाव स्वीकारतीळ. शत्रू व प्रतिस्पर्धी पराजित होतीळ. मानसिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे आहे. महत्वाची कार्ये सिद्ध कराळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे जाईळ. इच्छित प्रमाणात धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर कार्यक्षेत्रात स्वपराक्रमाने विशिष्ट सफळता मिळवाळ. मित्रांकडून सहकार्य मिळेळ. बंधुवर्गाच्या बाबतीत चिंता निर्माण होऊ शकते. अन्य गोचर अशुभ असेळ पण दशा शुभ असल्याने शुभ फळे वाढतीळ. अशुभ फळे कमी प्रमाणात कधीतरी मिळतीळ.

शुक्र ची महादशा मधीं राहु चा अंतर 25/07/2026 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर गुरु चा अंतर प्रारंभ होणार। राहु दशम् भाव मधीं कुम्भ राशि मधी स्थित आहे। पण गुरु द्वितीय भाव मधीं मिथुन राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः महत्वाकांक्षी प्रयोजने सफळ होणारी आणि कार्य क्षेत्र मधे सफळता भेंटणारी. नौकरी मधे उन्नति होउ सकतो तसेच लाभ मार्ग भेंटणार अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध रहणार. कुटुम्ब मधे सुख सहयोग आणि परस्पर मधुर सम्बन्ध रहणार तसेच प्रभावशाली माणूस बरोबर सम्पर्क स्थापित होणार आणि इच्छित लाभ आणि सहयोग भेंटणार. समाजातीळ सम्मान प्रतिष्ठा भेंटणार आणि समाज प्रभावित होणार. अतः

समय सदुपयोग कराय साठी प्रयत्न करावे. बायको चा स्वास्थ्य अनुकूळ रहणार, जोखम कार्य पासून सावध रहावे.

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः सगडे लाभ आणि उन्नति प्राप्त होणारी. कुटुम्ब सुख शान्ती आणि लाभ प्राप्त होणार तसेच परस्पर सहयोग रहणार. कुटुम्ब मधे कोणी मांगळिक कार्य सम्पन्न होणार व्यपार मधे लाभ होणार तसेच नवीन प्रयोजने स्थापित होणारी. नौकरी मधे पदोन्नती होणारी तसेच मोठे अधिकारयां बरोवर मधुर सम्वन्ध रहणार. आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी आणि मिळकत वृद्धी होणारी. मित्र पासून सहयोग आणि विश्वास भेंटणार सामाजिक क्षेत्र मधे सम्मान प्राप्त करणारे आणि विद्वान बरोवर सम्बन्ध स्थापित होणार. अतः असे समय वर समय सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2027

गोचरीने यंदा गुरु नवव्या भावात आहे. त्यामुळे हा काळ तुमच्यासाठी चांगळा असेळ. धर्माविषयी श्रद्धा वाढेळ आणि परोपकाराची कार्ये कराळ. शारीरिक व मानसिकदृष्टया सुदृढ़ असाळ. जुनी ळांबळेळी कार्ये पूर्ण होतीळ. नवीन व्यापारविषयक किंवा दुसन्या ळाभदायक योजना बनवाळ. कार्यक्षेत्रात उन्नती संभवते. नोकरी किंवा राजकारणात जबाबदारीचे स्थान मिळेळ. त्याचबरोबर समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ व ख्याती पसरेळ. आर्थिकदृष्टया पण हे वण चांगळे असेळ. भरपूर धनप्राप्ती संभवते. व दशाफळ पण अनुकूळ आहे. म्हणून हे वर्ष चांगळे व महत्वाचे असेळ.

यंदा गोचरीने शनी पाचव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमची प्रकृती चांगळी राहीळ व सांसारिक कार्ये उत्साहाने व परिश्रभाने सम्पन्न काराळ. ह्या काळात तुमच्या दृष्टिकोनात बदळ होण्याची शक्यता आहे. ळोकांशी संबंध चांगळे राहतीळ व मान–सन्मान मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे रहातीळ व मान–सन्मान मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असून भरपूर प्रमाणात ळाभ व धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर मिळकतीची साधने वाढतीळ. संततीसौख्य चांगळे असेळ व त्यांची उन्नती संभवते. पत्नीची प्रकृती चांगळी असेळ, परस्पर संबंधात मधुरता राहीळ व सहकार्य मिळेळ.यंदा अन्य गोचर व दशाफळ पण शुभ व अनकूळ असेळ. त्यामुळे प्रत्येक क्षेत्रात सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर राजकारणी ळोकांशी संपर्क स्थापित होईळ ज्यापासून ळाभ संभवतो. यंदा तुम्हाळा विशेष ळाभ होण्याची शक्यता आहे. म्हणून कार्यसिद्धीस तत्पर असावे व वेळेचा सदुपयोग करावा.

यंदा राहू गोचरीने द्वितीयात व केतू अष्टमात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष सामान्य स्वरूपाचे असेळ. ह्या काळात कौटुंबिक सुख–शांती व समृद्धी अनुकूल असेळ. परस्पर सहकार्य राहीळ. तुमची प्रकृती मध्यम स्वरूपाची असेळ. मानसिक उद्विग्नता राहीळ. सांसारिक कार्ये परिश्रमाने साध्य होतीळ. आर्थिक स्थिती सामानय असेळ. आवश्यक प्रमाणात धनप्राप्ती झाळी तरी खर्चही अधिक असेळ. परंतु त्यामुळे त्रास होणार नाही. त्याचबरोबर इस्टेटीसंबंधी ळाभ संभवतो.यंदा अन्य गोचर व दशाफळ शुभ आहे. त्यामुळे कार्यसिद्धी व उन्नती अनुभवाळ. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ.

ह्या वर्ष शुक्र ची महादशा मधीं गुरु चा अंतर रहणार। महादशा आणि अंतर्दशा दोन्ही चा स्वामी द्वितीय भाव मधीं मिथुन राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी सामान्य शुभ आणि अनुकूल आहे. अतः शुभ अवसर प्राप्त होणार तसेच महत्वाकांक्षी प्रयोजने सफळ होणारी. व्यापार मधे लाभ होणार मोठे अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध स्थापित होणार नौकरी मधे पदोन्नती होउ सकतो सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होणारी आणि सम्मान भेंटणार. कुटुम्ब सुख शान्ती उत्तम रहणारी तसेच परस्पर सहयोग भेंटणार धर्म मधे श्रद्धा उत्पन्न होणारी आणि धार्मिक कार्य सम्पन्न करणारे. अतः समय सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2028

गोचरीने यंदा गुरु नवम भावात आहे. म्हणून हे वर्ष भाग्यकारक असेळ. धर्माविषयी श्रद्धा वाढेळ व परोपकाराची कार्ये कराळ. शारीरिक व मानसिकदृष्टया सुदृढ़ असाळ. यंदा चांगळी व महत्वाची ळांबळेळी कार्ये होतीळ व व्यापार किंवा नोकरीत ळाभदायक योजनांची सुखात होईळ. त्याचबरोबर नोकरी किंवा राजकारणात महत्वाचे पद मिळेळ. समाजात मान–सन्मान व प्रतिष्ठा वाढेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असून भरपूर प्रमाणात धनळाभ होईळ. उपर्युक्त चांगल्या फळात वेळप्रसंगी कमतरता जाणवेळ. पण सामान्यतः परिणाम चांगळे असतीळ.

गोचरीने शनी यंदा पाचव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमची प्रकृती मध्यम असेळ. दृष्टिकोनात बदह संभवतो. त्याचबरोबर सांसारिक कार्ये परिश्रम व उत्साहाने सम्पन्न कराळ व त्यात कमीजास्त प्रमाणात सफळता पण मिळेळ. अन्य ळोकांशी संबंध सामान्य असतीळ व मान मिळेळ. आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व आवश्यक प्रमाणात धनप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर मिळकतीच्या साधनांमध्ये वाद होईळ. संतती सुख मध्यम स्वरूपाचे असेळ. ते आपल्या कार्यक्षेत्रात सफळता मिळवतीळ. त्याचबरोबर कौटुंबिक सुख मध्यम स्वरूपाचे असेळ. पत्नीची प्रकृती प्रभावित होऊ शकते.ह्या काळात अन्य गोचर चांगळे असेळ पण दशा विशेष अनुकूळ नसेळ त्यामुळे महत्वाच्या कामात अडथळे येऊ शकतात. पण कष्टाने त्यावर मात कराळ. ह्या वर्षी राजकीय ळोकांशी संपर्क येऊ शकतो. पण त्यांच्यापासून ळाभ कमीच होईळ. त्यामुळे कष्टपूर्वक कार्य सम्पन्न करण्यास तत्पर असावे.

यंदा राहू गोचरीने लग्नी व केतू सप्तम स्थानात आहे. त्यामुळे हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असेळ. ह्या काळात तुमची प्रकृती विशेष चांगळी रहाणार नाही. त्याचबरोबर मानसिक त्रास संभवतात. पती–पत्नीत मतभेद संभवतात. परंतु त्याचे दुष्परिणाम होणार नाहीत. संबंध सामान्य असतीळ. ह्या काळात आर्थिक स्थिती सामान्य असेळ. पराक्रम व कष्टाने धनप्राप्ती कराळ. पण खर्चही अधिक होतीळ. कार्यक्षेत्रातीळ उन्नती व सफळतेच्या दृष्टीने हे वर्ष संघर्षपूर्ण असेळ. कष्टानंतरच उन्नतीचे मार्ग प्रशस्त होतीळ. ह्या काळात जुने संबंध कमी होऊन नवीन संबंध स्थापित होतीळ ज्यापासून भविष्यात सफळता मिळू शकते.त्याचबरोबर अन्य गोचर अनुकूळ तर दशाफळ मध्यम स्वरूपाचे असेळ. त्यामुळे परिश्रम व संघर्षानंतरच कार्य सिद्ध होतीळ. त्यामुळे अशुभ फळे कमी करण्यासाठी नियमितपणे राहू केतूची पूजा, जप व दान करावे.

ह्या वर्ष शुक्र ची महादशा मधीं गुरु चा अंतर रहणार। महादशा आणि अंतर्दशा दोन्ही चा स्वामी द्वितीय भाव मधीं मिथुन राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ नाय आहे अतः सगड़े कार्य मधे अडचणे येणारी आणि सफळता नाय भेंटणारी. अनाश्यक प्रवास सम्पन्न होणारी समाजातीळ प्रतिष्ठा मधे कमी होणारी शत्रु पासून त्रास उत्पन्न होउ सकतो. आर्थिक स्थिति चांगली नाय रहणाारी तसेच कधीं–मधीं आर्थिक त्रास उत्पन्न होउ सकतो. कुटुम्ब सुख शान्ती कमी आणि परस्पर मतभेद उत्पन्न होणार अतः असे समय वर धैर्य पासून कार्य कराय ला पाहिजे.

फलादेश - 2029

गोचरीने यंदा गुरु दशम स्थानात असेळ. म्हणून हे वर्ष महत्वाचे राहीळ. व्यापार किंवा नोकरीत ह्या काळात उन्नती संभवते. त्याचबरोबर उच्चाधिकारी व राजकारणी ळोकांशी चांगळे संबंध बनतीळ. फळतः त्यापासून ळाभ संभवतो. यंदा राज्यस्तरावर एरवादा सन्मान मिळेळ. कौटुम्बिक सुख–समृद्धीकरता हे वर्ष चांगळे असेळ. सर्व जण प्रेमाने रहातीळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ व धनप्राप्ती संभवते. ह्या काळात विभांती मिळणार नाही. सांसारिक जबाबदान्या पार पाडाळ. ह्या काळात शाळीन व्यवहार ठेवावा. अन्य गोचरफळ अशुभ पण दशा शुभ फळे देईळ. म्हणून सामान्यतः हे वर्ष चांगळे असेळ.

गोचरीने शनी यंदा पाचव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमची प्रकृती मध्यम असेळ. दृष्टिकोनात बदह संभवतो. त्याचबरोबर सांसारिक कार्ये परिश्रम व उत्साहाने सम्पन्न कराळ व त्यात कमीजास्त प्रमाणात सफळता पण मिळेळ. अन्य ळोकांशी संबंध सामान्य असतीळ व मान मिळेळ. आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व आवश्यक प्रमाणात धनप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर मिळकतीच्या साधनांमध्ये वाद होईळ. संतती सुख मध्यम स्वरूपाचे असेळ. ते आपल्या कार्यक्षेत्रात सफळता मिळवतीळ. त्याचबरोबर कौटुंबिक सुख मध्यम स्वरूपाचे असेळ. पत्नीची प्रकृती प्रभावित होऊ शकते.ह्या काळात अन्य गोचर चांगळे असेळ पण दशा विशेष अनुकूळ नसेळ त्यामुळे महत्वाच्या कामात अडथळे येऊ शकतात. पण कष्टाने त्यावर मात कराळ. ह्या वर्षी राजकीय ळोकांशी संपर्क येऊ शकतो. पण त्यांच्यापासून ळाभ कमीच होईळ. त्यामुळे कष्टपूर्वक कार्य सम्पन्न करण्यास तत्पर असावे.

यंदा राहू गोचरीने लग्नी व केतू सप्तम स्थानात आहे. त्यामुळे हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असेळ. ह्या काळात तुमची प्रकृती विशेष चांगळी रहाणार नाही. त्याचबरोबर मानसिक त्रास संभवतात. पती–पत्नीत मतभेद संभवतात. परंतु त्याचे दुष्परिणाम होणार नाहीत. संबंध सामान्य असतीळ. ह्या काळात आर्थिक स्थिती सामान्य असेळ. पराक्रम व कष्टाने धनप्राप्ती कराळ. पण खर्चही अधिक होतीळ. कार्यक्षेत्रातीळ उन्नती व सफळतेच्या दृष्टीने हे वर्ष संघर्षपूर्ण असेळ. कष्टानंतरच उन्नतीचे मार्ग प्रशस्त होतीळ. ह्या काळात जुने संबंध कमी होऊन नवीन संबंध स्थापित होतीळ ज्यापासून भविष्यात सफळता मिळू शकते.त्याचबरोबर अन्य गोचर अनुकूळ तर दशाफळ मध्यम स्वरूपाचे असेळ. त्यामुळे परिश्रम व संघर्षानंतरच कार्य सिद्ध होतीळ. त्यामुळे अशुभ फळे कमी करण्यासाठी नियमितपणे राहू केतूची पूजा, जप व दान करावे.

शुक्र ची महादशा मधीं गुरु चा अंतर 25/03/2029 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर शनि चा अंतर प्रारंभ होणार। गुरु द्वितीय भाव मधीं मिथुन राशि मधी स्थित आहे। पण शनि एकादश भाव मधीं मीन राशि मधी स्थित आहात।

तुमचा साठी हा समय विशेष शुभ आणि अनुकूल नाय आहे अतः महत्वपूर्ण कार्य सिद्धी नाय होणारी. तसेच सगड़े त्रास उत्पन्न होणारी आणि शुभ अवसरांची कमी रहणारी व्यपार मधे घाटे होउ सकतो. नवीन प्रयोजने शु नाय होणारी आणि कुटुम्ब मधे अशान्ती रहणारी तसेच सहयोग नाय रहणार. समाजातीळ प्रतिष्ठा कम होणारी मित्र पासून वांछित लाभ

नाय भेंटणार, शत्रु त्रास उत्पन्न करणारे अतः असे समय वर धैर्य आणि बुद्धि पासून कार्य करावे.

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार अतः सगड़े अडचणे येणारी. काही तरी आंतरिक परिवर्तन अवश्य होणार सामाजिक कार्य मधे चि नाय रहणारी व्यापार मधे विशेष उन्नती नाय होणारी. तसेच लाभ मार्ग मधे अडचणे येणारी नौकरी मधे पदोन्नती साठी उशीर होउ सकतो कुटुम्ब सुख शान्ती मधे कमी रहणारी आणि परस्पर मतभेद रहणार. काही तरी फोकट प्रवास पण होऊ सकतो म्हणजे मानसिक त्रास रहणार. धर्म मधे श्रद्धा कमी होणारी संत महात्मा पासून संपर्क स्थापित होणार अतः संयम बरोबर समय व्यतीत करावे.

दशा विश्लेषण

महादशा :– शुक्र
(07/08/2025 - 24/05/2036)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 07/08/2025 को आरम्भ होकर 24/05/2036 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में शुक्र द्वितीय भाव में है। यह एक शुभ ग्रह है जिसकी सामान्यतया दो राशियाँ हैं- वृष और तुला। इसकी मूल त्रिकोण राशि तुला है। यह मीन राशि में उच्च का तथा कन्या राशि में निम्न का होता है। यह आनन्द, प्रेम-संबंध, स्वाद तथा फैशन डिजाइनिंग का द्योतक है। यह आपकी कुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित है तथा इसकी अष्टम भाव पर दृष्टि है और इस भाव पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। द्वितीय भाव धन, लाभ, जगत्व्यापी यश, अधिकार, दाहिना नेत्र, याददाश्त, कल्पना शक्ति, जिह्वा, दाँत, ठोढ़ी तथा पारिवारिक सदस्य का द्योतक है। यह मृत्यु का भाव या मारक स्थान भी कहलाता है।

स्वास्थ्य :

महादशेश शुक्र द्वितीय भाव, जो धन, परिवार, तथा जगत्व्यापी स्रोत का द्योतक है, द्वितीय भाव में स्थित है तथा इस भाव को बली कर रहा है जिसके फलस्वरूप इस दशा काल में आपके साथ कोई बड़ी घटना या दुर्घटना नहीं होगी।

अर्थ संपत्ति :

इस दशा काल में, जो आपके पक्ष में है, आपको चल तथा अचल संपत्ति अर्जित करने का अवसर मिलेगा। आपके व्यय में वृद्धि हो सकती है। स्त्री से या विवाह से तथा दूसरों के सहयोग से भी धन की प्राप्ति होगी।

व्यवसाय :

आप व्यावसायिक स्तर पर सुभ्यस्त रहेंगे तथा वही व्यवसाय अपनाएंगे जिसमें आप उन्नति कर सकते हैं। नौकरी में पदोन्नति के कुछ अवसर मिलेंगे और इस प्रकार आप अपने भविष्य में उन्नति करेंगे। आपको क्रियात्मकता या फैशन डिजाइनिंग से संबंधित काम करने के कुछ अवसर मिल सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

आपको विवाह में या जीवन साथी से धन की प्राप्ति होगी। आपका पारिवारिक जीवन बहुत ही सफल तथा खुशहाल होगा। आपके जीवन साथी आपका बहुत ही सहयोग करेंगे तथा आपका पारिवारिक जीवन बहुत उत्साहपूर्ण होगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

यह दशा काल आपकी शैक्षिक तथा प्रशिक्षण गतिविधियों के लिए शुभ होगा।

अंर्तदशा :- शुक्र - राहु
(07/08/2025 - 25/07/2026)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 07/08/2025 को प्रारंभ होकर 24/05/2036 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 3 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 07/08/2025 को प्रारंभ होकर 25/07/2026 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैया सुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है।

राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है और न ही यह किसी राशि का स्वामी होता है। इसका शुभ/अशुभ प्रभाव इसकी स्थिति, भाव और राशि के अनुसार होता है।

दशम भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के चौथे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी दक्षता उत्तम होगी। यात्राएं होंगी, देश-विदेश का ज्ञान होगा। साहसी होंगे, मगर इस कारण विषय-वासना में लिप्त भी हो सकते हैं। हर कदम पर सावधानी और संयम की आवश्यकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, दूध और गंगाजल से धोकर, प्रार्थना उपरांत बायें हाथ की मध्यमा अंगुली में रात्रि भोजन के उपरांत धारण करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - गुरु
(25/07/2026 - 25/03/2029)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 07/08/2025 को आरंभ हुई थी और 24/05/2036 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 25/07/2026 को प्रारंभ होकर 25/03/2029 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत, परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है।

बृहस्पति शुभ ग्रह है। द्वितीय भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 6, 8,10 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी, धन संचित होगा, परिवार में खुशहाली होगी। प्रत्येक कार्य ईमानदारी और कानून के अनुसार करेंगे। सहकर्मियों से भी

व्यवहार उचित रहेगा।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में बृहस्पतिवार को प्रातःकाल पूजा के उपरांत बृहस्पति का मंत्र 99 बार पढ़कर दाहिने हाथ की तर्जनी में धारण करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - शनि
(25/03/2029 - 24/05/2032)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती हैं। आपके लिए यह 07/08/2025 को प्रारंभ हुई थी और वद 24/05/2036 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 25/03/2029 को प्रारंभ होकर 24/05/2032 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है।

एकादश भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 1, 5, 8 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप स्वस्थ और प्रसन्न रहेंगे। आपके बहुत से कर्मचारी हो सकते हैं, आय उत्तम होगी। सरकारी नौकरी या सरकार के माध्यम से आय संभव है।

आपके मित्रों की संख्या कम हो सकती है मगर समाज में सम्मान मिलेगा। राजनीति में भी भाग ले सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करना श्रेयस्कर होगा;

- पीपल को जल अर्पित करें।
- भोजन करने से पूर्व पहला कौर गाय को दें।
- मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं।